

या वस्तु-परिचय के लिये संक्षिप्त प्राकल्पन दे दिया गया है, जिसमें विद्यालयों के प्रयोगादि के समान ही में उल्लेख और सुविधा हो सके।

उन समस्त पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का भी उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है जिसमें कवितार्पण या लेखनादि लिए गए हैं, जिसमें विद्यालयों में स्वतन्त्र अध्ययन और पुस्तकालयों में करने की रुचि उत्पन्न हो।

जो शैलिक विशेष शैलियों के प्रयोजक, विचारक और प्रचारक हैं तथा जिनका हिंदी-संसार में समादर है और जो प्रतिष्ठित एवं परिचित लेखक हैं, विशेष रूप से उनके ही मुद्र, मुद्र-चतुष्टय और वंश-शैलियों और कालों के संकलन करने की और विशेष ध्यान रखा गया है।

प्रत्येक पाठ के साथ पाठ-कहावक के रूप में किष्ट-शब्दों, पदों एवं प्रयोगों (मुद्रावली) पर व्यवस्थित प्रकाश डाला गया है। विदेशीय शब्दों और पदों की मूल्य व्याख्या भी टिप्पणियों में की गई है। विशेष शब्दों या शब्द-मुद्रों की बनावट आदि की धार भी संकेत दिए गए हैं।

प्रत्येक पाठ के अंत में जो अभ्यास दिए गए हैं, उनमें इनमें विशेष भूमि दिया है। इस संबंध में शिक्षा विभाग की विनम्र में ही हुई बातों का पूरा ध्यान रखा गया है और नदनुबल ही ध्यान बनाए गए हैं। यदि शिक्षक इन अभ्यासों के आशय पर बालकों के अध्ययन-कृतियों को हमें पूर्ण आशा है कि उन्हें स्पष्ट योग्यता प्राप्त हो जायगी। भाषा के रूप, उसके शब्दों-वाक्यों आदि में पूरा परिचय हो जायगा। विचारों के प्रकट करने की शक्ति बढ़ेगी, वाक्य-विन्यास का ज्ञान होगा और निरर्थकता की योग्यता बढ़ेगी। साहित्य-प्रयोगों में अनुगमन होगा और भाषा में रुचि उत्पन्न होगी। जिसमें भी नकार के अभाव में, उत्पन्न और उत्तुल्य प्रश्न होने चाहिए प्रायः वही इस पुस्तक में होगा।

हमारे परिवारिक शिक्षकों के लिये हमने प्रयोगशाला के साथ सबसे संबंध रखनेवाली उन गहराई बातों की ओर भी ध्यान देना, जहाँ यह है कि नर प्रकाश डालना आवश्यक है और जो विद्यार्थियों की साथ शान-वृद्धि के लिये आवश्यक और उपयोगी है।

पुस्तक के अंत में 'सुख-वन्दन' की विमर्श के आधार पर अनेक प्रविनिधि-लेखक और कवि की मूल्य कीवनी तथा उनकी भाषा और शैली कादि की मांजक खोजना भी परंपरा के रूप में देखी गई है। सदा के साथ ही देकर कुछ में हमने इसे हमने दिना है किन्तु विमर्शों का ध्यान रख ही शीघ्र में यह सब इस पर ही प्रथम में आ जाय। प्रथम में यह का अध्ययन करें, उनकी भाषा एक ही शैली कादि की सब देखें और इस प्रकार पूरा परंपरा ही जाने पर हमनी विवेचना में लाभ उठावे और फिर उन लेखकों के खसक में विशेष जानकारी प्राप्त करें। समाधान यह सब ही सब और प्रसन्नता करने के विमर्श संग्रह और उनका संग्रह (गारे और संग्रह दोनों प्रकार के) विमर्श में लगवा दिए गए हैं, हमने पुस्तक की मांजक और भी समझ उठा है। पुस्तक की क्षमता-संग्रह, साकार-प्रकार कादि प्रथम मांजकी सदा पर प्रकाशक मांजकी की और में रूप प्राप्त तथा संग्रह ही और पुस्तक संग्रह ही सांख्य और शीघ्र संग्रह गई है।

[illegible]



# विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१ मातृ-भूमि (पद्य)—मैपिलीररर गुन ...	१
२ हरिद्वार और हृषीकेश की यात्रा—मैनेरवरररर गुन, बौ० ए० ...	६
३ सिंधिया के भोज और त्योहार—संकलित ...	१३
४ राजा भोज का सपना—राजा रिवरररर ...	२१
५ कच्छयोत्सेवना (पद्य)—मैपिलीररर गुन ...	२९
६ शेर का शिकार—संकलित बौ० ए० ...	३५
७ आन—मदररररररर मित्र ...	४६
८ शिक्षागो का रविवार—स्वामी रत्नदेव ...	५६
९ काली-दनन (पद्य)—अपेन्द्रसिंह उपाध्याय ...	६९
१० सर चन्द्रशेखर वैकट रमन—भुवनेश्वर नागपूरसिंह ...	७८
११ हिमालय-दर्शन—कल्याणसिंह शेखावत ...	८६
१२ जीवन-संमान और छोटे प्राणी—लक्ष्मणररररर, एन० ए०, एल० टी० ...	९६
१३ गंगावतरण (पद्य)—जगन्नाथदास 'रत्नकर' बौ० ए० ...	१०८
१४ वाटरल का युद्ध—राजनेशन गेडुल जी ...	११६
१५ सचची निव्रता—हरिनरररर मित्र, एन० ए० ...	१२८
१६ बैतार का तार—संकलित ...	१३६
१७ तुलसी-रचना (पद्य) ...	१४५
(१) नवमई-मुनन—'तुलसी' रचयिता ...	१४५
(२) शिव-धरात—'००' तुलसीदास ...	१४५
१८ मनापर मे रंजितार—जगन्नाथ ...	१५५

विषय	पृ
१९ लब्ध—कानिक्प्रसाद ..	१६
२० जापान का शिक्षा-प्रणाली—चन्द्रमौलि गुप्त	१७
२१ नीति-निबन्ध (पद्य) ..	१८
(१) रत्नोम-रचना—रत्नोम ...	१८
(२) गिरधर रमरा—गिरधरराम	१८
(३) कपीर-बाली—कपीरराम ..	१८
२२ मिश्रता—समचन्द्र गुप्त ...	१९
२३ मरवर्द्धिरचन्द्र (नाटक)—भारतदु बाबू दक्षिणेंद्र .	२०
२४ राधण और अंगद (पद्य)—केशवदाम ..	२१
२५ प्रोष्म—उमाशंकर द्विवेदी ...	२२
२६ आत्मनिष्पन्नता—बालकृष्ण भट्ट .	२३
२७ बलमान हिंदी-साहित्य के गुण-दोष—"मिश्ररघु"...	२४
२८ सुर-मुखा (पद्य)—रमदाम ...	२५





# विषय-विभाग

## Prose (गद्य)

### I. DESCRIPTIVE PIECES

(a) Natural Subjects—Trees, etc.—

वृक्ष, विमान-वर्णन, लोह-मार्ग की ओर देखे वाली

(b) Man and His Activities, etc.—

मेरा काम विचार, रहने का अधिकार सिद्धता में मेरा छोटा  
सोना

(c) Travels—दार्जिलिंग और दुर्गेश्वर की यात्रा

(d) Some Pieces on Abstract Subjects, etc.—

सत्य, ज्ञान की विद्या-मण्डल, बेकार का काम, सम्भवतः  
ही विचारधारा

### II. NARRATIVE PIECES

(a) Historical Stories, etc.—

बादशाह का दुक

(b) Biographical :—

एक चन्द्रदेव का बचपन

(c) Stories of Chivalry, etc.—

मन्वी विजय

(d) Imaginative Stories, etc.—

एक मेरा का दुक



## III. LITERARY PIECES

## (a) Short Instructive Articles—

(निबन्ध)

## (b) Witty Pieces, etc.—खट

## (c) Essays—ग्रन्थ विवेचना

यन्मात्र द्विती लोकेन के गुण दोन, अनन्तद्वयवत् (नटवत्)

## (d) Literary Criticism and Drama—

## Poetry (पद्य)

1 Narrative—खण्ड खीर खण्ड

2. Puranic Stories—काली दमन

3. Descriptive—महाभारत

4 Inspirational—कर्मयोगसूत्र

5. Love of Country—मानु धर्म

6. Indictive—

नीति निबन्ध (शहीत रचना, सिरिधर शर्मा, कबीर दास)

मुनिता-मनम

7. Satirical—सिद्ध बाल

8. Devotional—शूर सुधा



१. यह न बड़ा बड़ा, ब्रह्म-संसार-द्वारा-बनीय है ।

( २ )

जिसकी रज में लोट लोट कर बड़े हुए हैं,  
 घुटनों के बल सरक सरक कर गड़े हुए हैं ।  
 परमईस-सम बात्स्य-काल में सब-सुख पाए,  
 जिसके कारण "धूमरे हीरे" कहलाए ।  
 हम खेने-कूदे हृदयुत जिसकी प्यारी गोद में,  
 हे मातृभूमि ! तुझको निरल मग्न क्यों न हों मोद में ॥

( ३ )

हमें जीवनाधार भ्रम तू ही देती है,  
 बदलें में कुछ नहीं किसी से तू लेती है ।  
 भेड़ एक से एक विविध उष्यों के द्वारा,  
 बोधण करती प्रेम-भाष से गदा हमारा ।  
 हे मातृभूमि ! उपजे न जा तुझमें कृति-अंकुर कभी,  
 तो तड़प बहर कर जल सगे जठरानल में हम सभी ॥

( ४ )

पाकर तुझमें सभी सुखों को हमने भोगा,  
 तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?  
 तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,  
 बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है ।  
 फिर अठ-समय तू ही इसे अचट देल अपनायगी,  
 हे मातृभूमि ! यह अंत में तुझमें ही मिल जायगी ॥

( ६ )

मुरझि, सुंदर, मुनर मुनन कुम पर मिलते हैं,  
 भाँति भाँति के सरल सुधोचन फर मिलते हैं ।  
 सोपानियों है ज्ञान एक से एक निराली,  
 खाने सोभित कहीं धातु वर रत्नोंवाली ।  
 ज्ञान बरपक होते हमें मिलते सनो पदार्थ हैं,  
 हैं मादभूति ! बसुधा, धरा वरे नाम क्यार्थ हैं ॥

( ६ )

शोक रहीं है कहीं दूर एक टैल-झेंदो,  
 कहीं पलावलि बनां हुई है तेरे बेंदो ।  
 नडिरी पैर पदार रहा है बन कर बेरो,  
 पुरखों से वर-पात्रि कर रहीं पूजा तेरो ।  
 नरु मलय-बाहु मानों तुम्हे बंधन बाध बढ़ा रहीं,  
 हैं मादभूति ! कितका न तु सात्विकभाव बढ़ा रहीं ॥

( ७ )

जनानियों, तू दयानयो है, जेननयो है,  
 सुधानयो, बाल्लत्ननयो, तू प्रेमनयो है ।  
 विनवालिनों, विरवजालिनों, दुरा हरली है,  
 भयनिवारियों, शोचिकाटियों, मुसकरी है ।  
 हैं शरददायिनी देखि ' तू करती लयका झर है,  
 हैं मादभूति ! संजान हन, तू जन्ती, तू शर है ॥

( ८ )

जिम पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे,  
 हमसे हूँ भगवान ! कभी हम रहें न न्यारे ।  
 लाट फोट कर वहीं हृदय को शांत करेंगे,  
 हममें मिलते समय मृत्यु से नहीं होंगे ।  
 वस मानुभूमि की धून में जब पूरे मन आर्पेंगे,  
 होकर भव-बंधन-मुक्त हम आरमत्त्व बन जाएंगे ॥

(स्वदेवतागीत से)

—मैथिलीशरण गुप्त

## पाठ-महायक

परिधान—वस्त्र, मेखवा—काटगुप्त, परमहंस—एक प्रकार के  
 मन्वाजी, जठरानल—जठर-पेठ + घनन-अग्नि—उदर की अग्नि  
 जिससे भोजन पचना है—बेलो—अनल का तो अर्थ है अग्नि, नल  
 का—एक राजा, पानी का नल, और अजल का अर्थ है वायु,  
 प्रयुषकार—प्रति—उपसग + उपकार—उपकार के बदले उपकार—  
 प्रति उपसग से अन्व शब्द बनाओ वया—अन्वेक, प्रतिस्पर्धा आदि,  
 वसुधा—वसु—(अष्ट वसु) गरति, वन + धा—धारण करने-  
 वाली—इसी प्रकार ध लगाकर बनाओ अन्व शब्द जैसे अयुध,  
 आरसहय—आस—लड़का—तत्सर्वथी ग्रम, अवर—आकाश, वस्त्र ।

## अभ्यास

१—मानुभूमि के नाम हमारा क्या संबंध है, क्यों वह हमारा  
 माना है ?

२- क्या क्या उपाय मनुष्य के हानि को दूर करे और  
करता है।

२—हमारा लक्ष्ये प्रति क्या संतुष्टि है ! वहाँ कवि धर्मों का हन्ना प्रकट करता है ।

४—सादर है का वैसा रुच यहाँ प्रयत्न छंद में विहित किया गया है ।

५-सू० १० । और ३ का मूल्यद भावार्थ मिली ।

६—विदेग, कलाच की प्रयोग करो—  
मात्र, गेसम, रोग, दूध, जेन ।

८—ए० १० : को न बा. कुन कार उनको रन कम पुग्न सान्त्व  
मान्द, कोर दुःख नै होसो।

८-१५ कदवा ८ कदम करें और हरी मछर की मावुर्ही वा  
मरु०३३ वा करें :गरे हरेजा सुनाओ।

੬—ਮਾ ਚਲਾ ਹੈ ਸੋਧਰਨ ਸਿਧੇ—

कह-कह, जान-जान, गे-गे, सुन-सुन,  
सुन।

१८—अथ न लभते' तदा कं विविधं सुखं वनादि—  
मन नयं सान्निध्यं सुखं च ।

[illegible]

224-

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

## (२) हरिद्वार और छपीकेश की यात्रा

आजकल सर्वत्र नीरम निदास का प्रताप-ताप छाया है, सारा भूतल भगवान् भारकर की ज्वाला सी मरीचिमात्रा से तप्त तबे के समान जल रहा है। प्रथम पवन तह-लठादि को भुजसा रहा है। घर से बाहर जाना दुस्साहस करना है। पट्ट छाँड़ में भी बैठे हाँक रहे हैं, पत्थी चंचु रोक्के नीहों या तह-कोटरों में छिपे बैठे प्राण-रक्षा कर रहे हैं।

कितना हो पानी पोजिए, तथा शान्त हो नहीं होती। सारे शरीर में प्रत्येद-प्रवाह है। ऐसे आतप-काश में कुछ आनन्द है ता शालुन आवास में या शिमला, मंमूरी भादि पर्वतों के शान्त शान्त प्रान्त के निवास में। श्रीमान् लोग यहाँ आतप से शान्ति प्राप्त करते हुए अल-वायु-परिवर्तन का भी लाभ उठाते हैं।

कुछ श्रीमान् "एक पन्थ हो काज" के सार को विचार कर मंमूरी और तैनीताल न जाकर हरिद्वार या तैनीताल लौकिक-वा राकिक दोनों आनन्द प्राप्त करते हैं। जिन सज्जनों ने एक बार भी इस परमानन्ददायक तीर्थराज में जाने का सौभाग्य प्राप्त किया है वे, हम पूरा विश्वास है, यह कहने में कदापि संकोच न करते कि यह स्थान अपने गुणों—

स्वास्थ्य-वर्द्धन और आशादकरत्व—में अपनी समझ नहीं रखता है। इस स्थान की मनोमोहिनी गति वर्णन के बादर है।

हम १२ जून को लखनऊ में पंजाब मंडल के द्वारा चले। मार्ग में एक ही विशेष घटना घटा, अवध-महेलागंट रेल पर हरिद्वार के समीप लुक्कर नामक एक स्टेशन है। हम मय देहरा-इलाहाबादवालों गाड़ों में निश्चित बैठ वातांताप कर रहे थे कि एक धावू साहब अपने बाल-बच्चों के साथ उसी टिक्ये में आ विराजे। गाड़ी तेज़ होकर कुछ ही आगे गई होगी कि धावू साहब के छांद बच्चे ने बनका मनीयंग, जिसके अन्दर लगभग ७७०, के नाट और कुछ रुपये-पैसे थे, गाड़ी से बाहर गिरा दिया। धावू साहब अरे ! बेंग ! कह कर उछल पड़े, गोद से बच्चा गिर गया। हमारे एक मित्र ने तुरंत गाड़ी खड़ा करने की जंज़ोर खींची, गाड़ी खड़ा हो गई। हम लोग उत्तरता देखते क्या हैं कि एक आदमी, चलती हुई गाड़ी से कूद, बेग घठा बेग से भागा जा रहा है। हम लोग पोछे दाँटे और लगभग आधे मील पर उसे पकड़ सकें। बेंग मिल गया और मामला ज्यों-त्यों ठंडा हुआ। गाड़ी फिर चल दी और हम लोग सकुशल प्रातःकाल सा० १३ को 'हरिद्वार' जा पहुँचे।

गव यर्ष की अपेक्षा इस साल हरिद्वार में बहुत कम मंडा हुआ। भयंकर दुर्मिच्छ और उससे उत्पन्न घोर दुःख का इस न्यूनता के कारण ही मकने हैं। यहाँ पर अनेक देव-मंदिर





प्रकार से पोषणार्थ है। हमें आशा है कि अत्येक हिंदू कुल न कुछ देकर इन पवित्र अतिकृत को सहायता करेगा। इस आसम के अधिकारियों से हमारा निवेदन है कि वे धर्मनिरपेक्ष को हटाकर इसका प्रबंध एक लुशितिव तथा सुयोग्य समा को दें और यदि इसे चिरस्थायी तथा उपयोगी बना दें।

१५ जून को प्रातःकाल हमारी इपाकेश के लिये तैयारी हुई। बैनगाड़ी के लिये वहाँ तक और कोई भी सवारी नहीं जाती। मार्ग में दो-एक स्थानों में पहाड़ पर चढ़ना-उतरना पड़ता है। यहाँ के लोग कोसों का 'मील' कहते हैं। पहले सुनते थे कि दरिद्वार से इपाकेश १० 'मील' है। हमने सोचा था कि अपने हिमाचल में केवल ५ ही कोस चलना होगा, परंतु उनके स्थान में हमें १० कोस का मार्ग नापना पड़ा। रास्ते के पथीले होने के कारण बैनगाड़ी को बहुत हिंसता और 'लड़-खड़ा' पड़ता है। इपाकेश-घार में गाड़ी के आदेशित होने के कारण घोररूप से उदर-अंधन हो जाता है।

लौटने समय एक अति खूबसूरत नृत्य का साथ हुआ।  
जिस समय पर्यटकों के ऊपर चढ़कर गाड़ी रूट से नीचे गिरती  
थी, देखते ही देखते जो बदमर्शों ने हा हाते थे, रास्ते में बाधा डेर  
पर मायाजादू की का मंत्र पड़ता है। इसी तरह से भरत  
की ही शक्ति की। मायाजादू का मायाजादू मुक्त है। वहीं पर  
जाता है। इसका मतलब है कि मायाजादू ने जाते ही का बंधन  
मन में रखा है। इसका मतलब है कि मायाजादू है।





पाठ-सहायक

आश्चर्यादित—दुके हुए, निर्दिष्ट—निश्चित, मत्तोमालिन्य—  
(मनस + मालिन्य) मन की मलिनता, चरमार्था—दीप जल तक  
रहनेवालो, आन्दोलित—दिलतो हुए काठिया—बड़े बड़े क्षम्यो,  
अप्रतिहत—अटक, श्लाघनीय प्रशंसनीय ।

आख्यास

- १—इस यात्रा को परिचालित करने लगे हैं लियो ।
- २—तबू भी का कदो हैमा क्या चिन्त लव्या है ?
- ३—भावाप लब्धकर वाक्पा में प्रयोग कर—माग मानना, हवा  
हीना, अरमा हना ही नगना, च उमा होना, पैरा में काम  
होना, दृष्ट भीम लेना ।
- ४—जिस विशेष चीज में प्रयुक्त हुए हैं, हमें भिन्न भिन्न अर्थों में  
प्रयुक्त कर —

हीला करना बाल, टटो, महारत्ना, द्य ।

- ५—जिस प्रकार के शब्द हैं और कैसे बने हैं—ऐसे ही और शब्द  
बना कर कब न कह—पयरीयो बरव, पार्वय दंडीली  
चोपरीय ।
  - ६—इस तरह के शब्दोंके शब्द पुनः और इन्हीं के समान अन्त  
शब्द बनाओ तथा प्रयुक्त करो ।
  - ७—प्रथम अनुच्छेद का अर्थ—पुनः और उनको यह व्याख्या कर  
उनकी में फिर तब चरमार्था के रूप में परिवर्तित करो ।
  - ८—अन्तिम अर्थ—  
हमेश्वर्य प्रजेष्टीह्य जनेष्ट्येक, बुध्दीष्टीष्ट, पारपादी ।
  - ९—नेत्रोत्तम द्युष्टी बना है, का है अर्थ कयो प्रयुक्त है ।
- संकेत—

इस जाने का माग दिनांक और कदा के पाठ का निर्देश  
होना समझना



## (३) तिथिया के भाज और त्योहार

भारतवर्ष में बीरता के नामे मिल्ले, राजपूत और मरहठा जाति के नामे अति प्रसिद्ध हैं। इन लोगों और विगंपरूप में मरहठों ने सुनलमाने में अनेक बार गमावकारों युद्ध किए और अंत में उनकी म्यारिन राई-भा को समूल नष्ट हो कर दिया। तदनंतर मिल्लों और मरहठों को अंगरेजों ने भा घुड़ करने के अवनम प्राम हुम् और जिन बीरता का परिचय उन्होंने दिया उसकी भूरि भूरि प्रशंसा और निम्न गुणग्राहक विदेशियों ने की है। यहाँ उन्होंने मरहठों के सामाजिक जीवन, भोज, त्योहार एवं गिहादारादि का साधारण विवरण किया जाता है।

दोस्तराव निंदिया भारतवर्ष के इतिहास में एक प्रसिद्ध व्यक्ति का हुक्के हैं, जिनके विषय में, प्रस्तुत प्रमाण में, विशेष लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने अंगरेजों से युद्ध किए और परस्पर मर्दि हो जाने पर एक अंगरेजों रेजिमेंट उनके साथ रहने लगा, जिसके साथ ही अंगरेजों मंता का समयक ई० स० १८०६ से अनंत चलने लगा। इसने तिथिया महाराज के साथ रहते हुए अपने भाई को, जो रंगरोड में था, ३२ पत्र लिखे थे। पहला पत्र २६ दिसंबर सन् १८०८ को और अंतिम २७ फरवरी सन् १८०६ को लिखा था। इनके पत्रों से मरहठों के अन्य व्यवसाय-विश-



तरफ से रेज़ाईंट के यहाँ पहुँचे थे, बैठे। चन्ने मम - इतर और  
पान दिए गए और गापान्नाब, जो पहले रेज़ाईंट माहय के स्वागत  
के लिये द्वार पर खड़ा थे, उन्हें बड़ा वापस पहुँचाकर लौट आए।

जब महाराज किसी से मिलने जाया करते तो अपनी मम-  
नद (गदा) यही पहले हा से भेज दिया करते थे और वहाँ पर  
प्रायः सय याते वैसा ही हातां जैसे चन्दन दरार में हुआ करती  
थी। हाँ, पान व इतर देने का काम उन निःशुक्र का होता  
था। विशेष अवसरों पर रिज़ाईंट दा जाती था। एक बार  
रेज़ाईंट माहय को महाराज को और से एक प्राति-भोज दिया  
गया। मायंकाल का समय था, हरे में मेवां-मिष्टानां व पक्षियों  
आदि का अच्छा ठाट-घाट लगाया गया था। महाराज की  
तरफ से एक पैली, जिसमें एक हजार रुपये थे, भेंट की गई  
और रेज़ाईंट माहय ने उन सरदारों को, जो पैली लाया था,  
दिलखत दा। फिर रेज़ाईंट ने गवर्नर-जनरल को और से  
चार सुंदर सरयां घोड़ों के सहित एक सुंदर बग्गा, जिसमें  
सोने का काम हो रहा था, महाराज को भेंट की।

महाराज को और से सय त्याहार यथाविधि मनाए जाते  
थे। मेक्रांति के अवसर पर महाराज ने मुख्य मुख्य सरदारों  
तथा रेज़ाईंट को विल भेंट किए। उसी अवसर पर ह्मादनों को  
एक धनाढ्य वैश्य ने बहुत-से आइयाँ के भोजन का निमंत्रण  
दिया और गान-पान का प्रशस्तनीय खर्च किया। जिमाने को  
परवाना पत्तेक को एक घोड़ी, कपल और रुई की सदरी भेंट





ये हि गानवाले एक ही पल्लव से बांध-नाथ सौ रूपये एकत्र कर ले जाते थे।

जन्माष्टमी के महात्म्य के लिये विशेषरूप से एक बिलीरों तैलु ताना गया और पूल-हाल नदय ऊँच बनार गए। इस काम के लिये हजारों के बहुत जायनों के बादन से मोल ली जाती थी। उत्तम का सनातन पर फिर बैरपा को पैर दी जाती थी। इस अवसर पर आदर का एक सहस्र रूपया दान दिया गया। सायंकाल को नयुरा से ऊपर हुए प्रवीर रातपातों का इलभारा न ननाहर रात हुआ। नयुरा ने इस समय के लोग बहुत धर कर वहाँ से दूर दूर अभिनय-भराना जया करते थे।

दशहर के त्योहार पर एक दिन एव ही घोड़ों को लान, मालिया ऊँच के द्वारा देया और अल्ल-रुखा का साक दिया गया। प्रत्येकाल कवापद हुए। महापति ऊँचों टैन बजे पधारे। उनके पहले हलपया पर भंडे निकाले गए। लखार और अन्तर ऊँच जुष्ट के साथ थे। पंडितों ने एक वृत्त की ठरने की—  
 का एक स्थल पर लगाई गई थी—दूध, जल ऊँच से पूजा की।

तदन्तर महापति ने वतने से एक भाग अरुणें वलवार से लोड़ और ठाढ़े ही कर नीलरुठ छोड़ दिए गए जिन्हें उड़ने हुए देख पाल का बचन तथा धेंदुइयों का चलना प्रारम्भ हुआ और सब लोग एक रेव की और दौड़े और वहाँ से दालें ले आए। सतानी के परपन् महापति सबेरे हुए हाथों पर सवार हो अरुणें निवास-स्थान की पधारे। नग ने स्थान स्थान

रक्ता, कोई नदी या तात्प्राय नहाने से न छोड़ा  
आदमी नहीं है जिसकी निगाह में मैं पवित्र पुण्यात्मा न

अथ बोझा, डीक, पर भोज ! यह तो बगला कि न  
की निगाह में क्या है । इया मैं बिना घुप  
विषयार्थ होने हैं ? पर मृगत की किरण पड़ने ही जैसे  
बसकने लग जात हैं । क्या कपड़े के छाने हुए  
बिनी को कीड़े मारुम पड़ने हैं पर अब मूर्खीन  
बगलार इन्हा ना एक एक रूंद में इहारी जीव  
हैं । कम का नू कम बात का जानने से, जिसे अथवा  
बादिल, इन्हा नहीं ना था, मंग साथ था, मैं नेही भाँके

निशान अथ यह कहक राजा को मंदिर के कम बड़े  
दरबार पर पड़ा वे गया कि अहाँ में सारा  
वया का सीर फिर वह उमर में वा कहने लगा कि जो  
कमी ना पाए-कमी की कुछ की क्यों नहीं करता  
कमने नों निग निगाह नमक नमक है । पर वह  
कि नू पुण्य-वस की-बीन-से फिर हैं जिनसे  
कथारपर केरुत हुआ ।

राजा नू मृगच्छा अथवा वसक गया, यह तो  
मम की बात की, पुण्य वस के नाम से कमसे कम का  
ना निगाह निगाह, उसे फिर वस का कि वस का

चाहे न किया हो पर पुण्य मैंने इतना किया है कि भारी से भारी पाप भी उसके पासंग में न ठहरेंगा।

राजा को वहाँ ठम मनय नपन में तीन पेंड़ बड़े ऊँचे ऊँचे अपनी आँखों के मानने दिव्याई दिए। फला में लदे हुए कि भाग्य वैभक्त के उनको टहनिया धगती तक भुक गई थी। राजा उन्हें देखने ही डरा हो गया और बोला कि अत्य ! यह ईश्वर की भक्ति और जीवों को दया अर्थात् ईश्वर और मनुष्य दोनों की प्राप्ति के पेंड़ हैं, देखो फलों के वैभक्त से धरती पर नए जाते हैं। ये तीनों मेरे ही लगाए हैं।

पहले मैं तो वे नय नान लाल फल मेरे दान में लगे हैं और दूसरे मैं वे पोलें पोलें मेरे न्याय में और तीसरे मैं ये नय फल मेरे तप का प्रभाव दिखाते हैं। मानों उस समय चारों ओर से यह ध्वनि राजा के कान में गूँसी आती थी कि धन्य हो महाराज ' धन्य हो आज तुम्हारा पुण्यात्मा दूसरा कोई नहीं, साक्षात् यम के अवतार हो, इन लोक में भी तुमने बड़ा पद पाया है ही। उस लोक में भी तुम्हें इतने अधिक मिलेगा। तुम मनुष्य और ईश्वर दोनों का आचार में निरदोष निष्पाप हो, मरने के मंदिर में लोग कलक बरसाव के पर तुम पर एक हाँदा भी नहीं लगाते।

मत्स्य बोला कि भोज ! मैं इन पेंड़ों के लाल में खाने का पदार्थ नू ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया के लक्षण है। तब तो उनमें फल-फूल कुछ भी नहीं था। तब मैं मनुष्य बने रह लाज,

पाने और मफेद कल कहीं से आ गए। ये भय-भय इन पेड़ों में फल लगे हैं, या तुम्हें फुलाने और खुरा करने को किमी में उनकी दृष्टियों से लड़का दिए हैं। चन इन पेड़ों के पास चल कर दोनें तो मदी।

मेरी सपना में तो ये नाम लाख कल, तिन्दे नू अपने दान के प्रभाव में लगे चलता है, पर और कीर्ति फैलाने की बाद अर्थात् प्रभाव पाने की इच्छा में इन पेड़ में जाता है। निदान उयो ही मय ने इन पेड़ के लूने को दाघ पड़ाया, राजा सपने में क्या देखता है कि वे मारे कल जैसे आनमान से तारे गिरते हैं एक आन की आन में भरती पर गिर पड़े। धरती मारी नाल हागई। पेड़ों पर सिखाय पना के और कुछ न रहा।

मय ने कहा, राजा ! जैसे कोई किसी बात को मोम से विपकाता है उमी तरह तुने अपने भुवाने की प्रभाव पाने की इच्छा में ये फल इन पेड़ पर लगा लिए थे।

मय के तेल में यह मोम गल गया, पेड़ हँठ का हँठ रह गया, जो कुछ तुने दिया और किया सब दुनिया के दिखलाने और मनुष्यों से प्रभाव पाने के लिये, कबल ईश्वर की भक्ति और आवा की दया से ना कुछ भी रहा दिया। यदि कुछ दिया हो या किया हो ना तो ही उयो जल चलता है। मूर्ख ! इसी से भवास पर नू के ना आन के पाने का नेवार हुआ था।

आन के एक टटा मय ना अनन्य और का भूला समझ था पर वह भयम आन के भूला आन के ना, मय ने उस पेड़



इसी धामने किया कि जिममें अपने तईं धीरों में अच्छा और बढ़के बिचारें। ऐसे ही रूप पर गावरगनेश ! तू स्वर्ग मिलने की उम्मेद रखता है पर यह ता बतना कि मंदिर की उन मुँहों पर वे जानवर-में क्या दिखलाई देते हैं। कैसे सुंदर और प्यारे मायूम होते हैं, पर ता उनके पंखों के हैं और गर्दन फोरोते की, दुम में मारे किस्म के जवाहिर जड़ दिए हैं।

राजा के जी में धमंड की चिड़िया ने फिर कुरकुरी की, मानों मुझते हुए दिये की तरह जगमगा उठा। जल्दी से जवाब दिया कि मस्य यह जो कुछ तू मंदिर की मुँहों पर देखता है मेरे संध्या-बंदन का प्रभाव है। मैंने जो रातों जाग जाग कर और माथा रगड़ते रगड़ते इस मन्दिर की देहली को घिसा कर ईश्वर की स्तुति-बंदना और विनती-प्रार्थना को है यही सब चिड़ियों की तरह पंख फैला कर आकाश को जाती हैं, मानों ईश्वर के सामने पहुँच कर अब मुझे स्वर्ग का राजा बनाती हैं।

मस्य ने कहा कि राजा ! दीनबंध कदयासागर भोजगंगा जगदीश्वर अपने भक्तों की विनती सदा सुनता रहता है और जे मनुष्य छुट्ट हृदय और निष्कपट हाकर नम्रता और भडा। माघ अपने दुःख-मर्मों का पत्रचालाप अधवा इनक लमा हो का दुःख भा निबन्धन करना ॥ बंद उमका निबंदन उमा दम सूँ चादि का बंध कर पार हा जाता है फिर क्या कारण कि य मय धाव तक मंदिर का नेटव हो पर और यह ॥ धा इन द ना मता इस जगता क नाम जाने पर आकाश को उड़ नाते

या उनी तरह पर परकट कृत्यों को तरह कृत्यदाया करने हैं।

भाऊ हरा लेकिन नृत्य का नाम न छोड़ा। जब हँडर पर पहुँचा तो क्या देखता है कि ये नार जातर, जा पर से ऐसे दिखलाई देते हैं, मने हुए पड़े हैं, पल मुड़े-मुड़े और प. तरे दिख-कुच मड़े हुए, यही तक कि मने पदों क गंगा का निर भिना उठा दो एकने, तिलमे कुछ दन दाका था,। उड़ने का शराश भी किया तो उनका पंग पंग की तरह भारी दो गया और उन्हें उतों टोर दबा रखता। तदका रुख किए पर उड़ने दुरा भी न दिया।

नृत्य वाला, भाऊ 'यम' यही तंग पुनर कमें हैं, इन्हों' मृति-वदना और विनता-आर्धना के भरोसे पर नू स्वर में जाया चाहता है ? मूरत का इनको बहुत अच्छा है पर जान दिखकुच नहीं, नूने जे कुछ किया केवल लोगों को दिखाने का, जो नें कुछ भी नहीं। जो नूने एक बार भी जो से एकारा होता कि दीनदेष्टु दीनानाथ दीनहितकारी ! लुभ पायी, महाभरथायी, हृदये हुए को दया और हृता-दृष्टि कर, तो वह देरी पुनार नीर की तरह तारों से पार पहुँचा होती। राजा ने तिर नीचा कर दिया उतर कुछ न बन आया।

#### पड-महापद

महापद—यम व इन में कुछ जान के मने पर हलने का।  
यम नृत्य का नाम न छोड़ा। जब हँडर पर पहुँचा तो क्या देखता है कि ये नार जातर, जा पर से ऐसे दिखलाई देते हैं, मने हुए पड़े हैं, पल मुड़े-मुड़े और प. तरे दिख-कुच मड़े हुए, यही तक कि मने पदों क गंगा का निर भिना उठा दो एकने, तिलमे कुछ दन दाका था,। उड़ने का शराश भी किया तो उनका पंग पंग की तरह भारी दो गया और उन्हें उतों टोर दबा रखता। तदका रुख किए पर उड़ने दुरा भी न दिया।



अनगिनत—(अगणित) अन—नहीं, गिनती—गिनती, मोक्ष  
गणेश—मुख्य ।

## अभ्यास

१ - इस पाठ की भाषा में क्या विशेषता नुम्हे ज्ञात होती है ?

२—यत्मान स्वर्दी सेली और इस भाषा में क्या खतर है, अहाँ में  
आन पटना है चहाँ पवित्रन केने ।

१—कहानी की भाषा बेसी होनी चाहिए, इस कहानी में शब्द नक मरिन होना है ?

४ - इन्द्र और शिव ऊपर से लिखा जाना है,

भाजत इश लेकिन मय का साथ न छोड़ा ।

उनका पत्र... हो गया और उन्हें उसी डीर दया मिला।

तब मैंने कहा कि मैं तुम्हें नहीं दूँगा।

गंगा ने श्री से धर्मद्वय, अयमगु उरु।

हमारी प्रकृति के अन्तर्गत प्रकृतियों और उनमें सम्पादित परिवर्तन

५—इस कहानी में क्या संदेश मिलता है, उस पर तुम्हारा क्या विचार है ?

६—आज का पैसा और कल का पैसा हमारे साथ ही रहने दो ।

७—इस पाद के उद्गृह्यो के स्थान पर हिन्दी के उपयुक्त शब्द रखें

८—अरमे बावरां म प्रवृत्त ह। माराध लिम्बो—

कड़ी मर्तब सेना, बे गौर का पर है, आन की आन, १४  
ले न उड़ना, आगि से लाना ।

१.—कैसे समझें, इनके पराजितों समझ लिये—

मई, जामन धरना, जंग, भाने, दूध, परवरे ।

१०—'कन अथी स प्रयुक्त हूँ है, बिघ्न बिघ्न अथी स प्रयुक्त हूँ।  
सब भाग हूँ सब अर्थ सब सही

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## (५) कर्तव्योत्तेजना

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ।

पुरुष क्या पुरुषार्थ हुआ न जो,

हृदय को मर दुर्मलका तजो ।

प्रबल हो तुमने पुरुषार्थ हो—

सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो ?

प्रगति के पथ में विचरो, उठो,

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥१॥

न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वायं है,

न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है ।

समस्त का यह बात समर्थ है—

जि पुरुषार्थ वही पुरुषार्थ है ।

सुवन में सुन-शक्ति भरो, उठो,

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥२॥

न पुरुषार्थ बिना वह न्यून है,

न पुरुषार्थ बिना अरवर्ण है,

न पुरुषार्थ बिना अज्ञान कर्म

न पुरुषार्थ बिना अज्ञान कर्म

सफलता बर मुल्य धरो, उठो,  
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥३॥

न जिममें कुछ शक्य हो यही—

सफलता बड़ या सकता कहीं ?  
अपुरुषार्थ भयंकर पाप है,  
न इममें यश है, न प्रताप है ।  
न हृमि-कांट-भ्रमान कम, उठो  
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥४॥

मृज-जीवन में, जय के लिये—

प्रथम ही दृढ़ परीक्ष्य आदिन ।  
विजय या पुरुषार्थ विना कहीं  
कठिन है चिरजीवन भा यही ।  
मय नहा, मय-सिंधु तरो, उठो,  
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ॥५॥

यदि अनिष्ट बड़े, घटने रहें ।

विपुल विप्रे पड़े वदने रहें ।  
इदं म पुरुषार्थ रह यश—

नलि उठा, नम उठा "उठा उठा उठा"  
"उठा उठा उठा उठा उठा"

उठा उठा उठा उठा उठा उठा उठा

यदि अभ्यास तुम्हें निज स्वत्व है;  
 प्रिय तुम्हें यदि मान-महत्त्व है ।  
 यदि तुम्हें रखना निज नाम है;  
 जगत में करना कुछ काम है ।  
 मनुज ! तो क्रम से न डरो, उठो,  
 पुरुष हों, पुरुषार्थ करो, उठो ॥३॥

( २ )

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे  
 विचार ला कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी;  
 मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करे सभी ।  
 हृद न यों तु-मृत्यु तो दृष्टा मरे, दृष्टा जिये;  
 मरा नहीं वहां कि जो जिया न आपके लिये ।  
 यही पशु-पक्षि है कि आप हो सदा धरे,  
 वहां मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥१॥

उसी उदार को क्या मरस्वती बखानती;  
 उसी उदार में धरा कृतार्थ-भाव मानती ।  
 उमा उदार को मदा नडाव कीर्ति कृतनी  
 नया उसी उदार की ममत्त नृष्टि दृष्टनी ।  
 उमा उदार = समस्त विश्व में भर,  
 वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥२॥

सुधार्यं गतिदेव ने दिया करस्य ज्ञान भी,  
 तथा दवीधि ने दिया परार्थ अस्थि-ज्ञान भी ।  
 ज्ञानर-क्षितीश ने स्वर्मास दान भी किया,  
 महर्षि धीर कर्म ने शरीर-धर्म भी दिया ।  
 अनिम्य देह के लिये अनादि जीव क्या करे,  
 वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के शिर्ष मरे ॥३॥

महानभूति चादिष्ट, महा विभूति है वही,  
 वशाहता मदैव है बनी हुई स्वयं मही ।  
 विद्वद्-वाद बुद्ध का दया-प्रवाद में बड़ा;  
 विनीत शोकधर्म क्या न सामने भुका रहा ?  
 महा ? वही उदार है परापकार जो करे,  
 वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥४॥

रहा न भूल के कभी महीव मुग्ध विल में,  
 मनाय जान आपकी कग न तर्क विल में ।  
 अनाय कान है वही विनीकनाय माय है,  
 दयालु दोनवतु क बड़ विज्ञान दाय है ।  
 अनीव भाग्यदान है, अन्धार भाव जो भर,  
 वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥५॥

अनन्त अनन्त में अनन्त देव है स्वदे,  
 अनन्त ही स्व-वन्द्य जो वही रह्य बड़े बड़ ।

परम्पराप्रसंग में उठा, तथा वही सभी,  
 अभी असत्य-शोक में अपक हूँ वही सभी ।  
 रहा न यों कि एक में न काम और का नर,  
 वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥६॥

"मनुष्य-मात्र बंधु हैं" यही वही विवेक है;  
 पुराणपुराण स्वभू पिता प्रसिद्ध एक है ।  
 फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,  
 परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।  
 अन्तर्य है कि बंधु हो न बंधु को व्यथा हरें,  
 वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥७॥

—मैथिलीशरण गुप्त

### पाठ-सहायक

अपयः - तेन देवः यदि अनिष्टं अदुःखं अङ्गुलिं रते" यही  
 मनुष्य-मात्र बंधु हैं" यही विवेक है; पुराणपुराण स्वभू पिता प्रसिद्ध एक है ।  
 फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं, परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।  
 अन्तर्य है कि बंधु हो न बंधु को व्यथा हरें, वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥७॥

अन्वयः

मनुष्य-मात्र बंधु हैं" यही विवेक है; पुराणपुराण स्वभू पिता प्रसिद्ध एक है ।



(६) शेर का शिकार

[illegible][illegible][illegible]



जाना है। उसके निकट हो बकरों आदि कोई पशु बाध दिया जाता है। रात को जब शेर उसे खाने आता है तब शिकारी मरान पर से उस पर गोली चलाता है। दूसरी विधि यह है कि लोग एक विशेष ढंग से शेर का समझाकर जंगल के एक सुजे स्थानमें से आते हैं। वहाँ शिकारी हाथियों पर बैठे हुए दिन के समय उसे घेरूँ का निशाना बनाते हैं।

शिकारी लोग पहली विधि को अपना प्रसंग नहीं करते। यह विधि तो बली के घास-घास में बालों और बाघों के झलने के लिये ही उपयुक्त समझी जाती है। दूसरी विधि—हाथी पर से दिन के समय शेर का गोली से मारना—मनुष्य प्रकृत से अच्छी है। इसमें शिकारी को बोरता भा दुर्गो जानी है।

राजा लोग जब हाथी पर सवार होकर शेर का शिकार करने आते हैं तब उनके साथ बहुत-से सहाय सिपाही और भाड़ियों का हिजाकर शेर को हाँकनेवाले एक विशेष जाति के मनुष्य भी रहते हैं। ये लोग शिकारी कहलाते हैं। कौड़ीयों में ये यही काम करते हैं। इनको शेर के स्वभाव का वैदिक ज्ञान रहता है। शेर जब रात को मार के बाद मनुष्य घावम आता है तब ये उसका ध्यान रखते हैं। इनका हाथ में लम्बा लम्बा लाठियाँ होती हैं, लाठा के सिरे पर भाँज लगाने का लिये बना बना हुआ है लाँक भाँडियाँ हैं। हिजाकर शेर का आग लावन मारता है वह बड़ा काम मनुष्य पर आक्रमण कर दे ला उस मानव से राहता न सक।



जब गोली खाकर भाग जाता है तब भी शेर का पीछा करता है।  
 समकालीन पहेलियाँ हैं।

शिकार करने जंगल बड़े बड़े दुकड़ों में होते रहते हैं। इन  
 वायु बड़े बड़े गड्ढे बने होते हैं। एक रास्ता कोई पचास  
 या छत्ता सौ सौ पर्वतों के पैरों से आरंभ होकर उसकी  
 तक जाता है। जंगल में एक सौ सौ रास्ता इन्हीं मार्गों से  
 काटी जाती है। ये मार्ग शेरों को एक जंगल से दूसरे  
 दूसरे जंगल में लाने में काम देते हैं। इस मार्ग को  
 करते समय ही शेर पर गोली चलाई जा सकती है। इन जंगल  
 में, शेरों की घाट के कारण, निराना खाना कठिन होता है।

शिकारी लोग शेर को ससकारकर इन सुखे रास्तों में  
 भात है। तब राजा लोग हाथी पर से उस पर गोली चलाते हैं।  
 का हाथियों के लिये सबसे अच्छा समय दिन का तीसरा  
 होता है। हाथी ऐसे सचे होते हैं कि वे शेर को सुझाकर भाग  
 करने पर भी अपने स्थान से नहीं हिलते। प्रत्येक हाथी  
 महाबल के अनिरिक्त तीन बार बंदूकवालों मनुष्य भी रहते

शेरों को पैरों पर खाने के बाद दिन में सोये हुए  
 जंगल में शेरों को कुछ नशा कराना, यह कहना  
 है कि शेरों को शेरों का पार करने समय सुझा  
 देना है। शेरों को शेरों के पार करने का तरीका  
 है कि शेरों को शेरों के पार करने का तरीका  
 है कि शेरों को शेरों के पार करने का तरीका

लकड़ों के आदमी बनाकर—उनके सिर पर पगड़ा, गले में कमीज़ और नीचे पायजामा पहनाकर—इस लुटे रास्ते के साथ-साथ एक पंक्ति में गाढ़ दिए जाते हैं। कहते हैं, एक बार एक शेर ने, इनको सचमुच का आदमी समझ कर, इन पर आक्रमण कर दिया था। पर उनको भयानक सड़ा देखकर वह डरकर पोंछे भाग आया था।

शिकारी लोग इन बनावटी आदमियों को यहाँ छुपके से गाड़ते हैं, क्योंकि ज़रा-सी भी आहट हाने पर 'धारियोंवाले जंतु' को संदेह हो जाता है और वह चढ़ पड़ाह के ऊपर भाग जाता है।

शिकारी लोग जब शेर को हाँकने लगते हैं तब शिकार का एक शब्द किया जाता है। तत्कालीन समय अवस्थाओं के अनुसार कभी तो शिकारी बिलकुल छुपचाप रहते हैं और कभी शोर करते हैं। शेर का शिकार करते समय कभी कभी लकड़वाग्य और तौभर आदि दूर से जंतु भी निकल आते हैं।

शेर का सबसे कमज़ोर भाग उसके कंधे होते हैं। यहाँ गोली का पातक सबसे ज़गता है। पायल होकर शेर कभी कभी इतने ज़ोर से आक्रमण करता है कि वह उछल कर हाथ के पीछे पर पहुँच जाता है शेर के आक्रमण करने पर हाथ में लगे हुए शिकारी ज़रूर घबरा जाते हैं। वही शिकारी शेर को मारने के लिए तैयार रहता है। शेर का शिकार करने में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है। शेर का शिकार करने में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है। शेर का शिकार करने में बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है।

कई साल बादकार से वैदिक ऋषि वर गांधी नजाने की  
 हीन दुर्गति कहते हैं। वर गले गंग से वैदिक गङ्गा वर गांधी  
 अनायास वास्तव्य से कम नदा है। गङ्गा गङ्गा गङ्गा के गङ्गा  
 इन्द्र वर अनायास से गङ्गा न गले वर गङ्गा गङ्गा नजाने  
 गङ्गा वर अनायास है गङ्गा वर गङ्गा अनायास गङ्गा  
 गङ्गा है। इन्द्र गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा  
 है अनायास से गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा गङ्गा





हैं वहाँ ताककर गोमरी मारता है। मगर को यहाँ जगह सदसं कमज़ोर होता है।

गाना खाकर मगर अनेक धार नदों में भाग जाता है। फिर इसका पकड़ना कठिन होता है। नदियों के किनारे एक विशेष जानि के लोग रहते हैं। वे मगरों से मिलकुल नहीं दरते। वे लँगोटा पहन कर, दाघ में घाँस लिए, घड़ियाली से भरो हुई नदों में घुस जाते हैं, और जहाँ पानों में से ऊपर को लहू निकलता दायता है वहाँ घाँस से टटोलकर डुबकी लगाते हैं और घायल जन्तु को किनारे पर घसीट लाते हैं। कहते हैं, इन लोगों के शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध आता है। इससे मगर इनको नहीं खाता।

जंगला सूअर भी बड़ा भयानक जंतु है। घायल हो जाने पर यह शिकारी पर बहुत बुरी तरह से आक्रमण करता है। यह सवार के घाढ़े की टांगों को अपने मज़बूत और तोखण दाँतों से चोर कर उसे गिरा देता है। तब शिकारी का पचना कठिन हो जाता है। इस समय शिकारी के लिये प्राण-रक्षा का एक ही उपाय रह जाता है। वह यह कि वह निश्चल पड़ा रहे। उसका जरा-सा भी हिलने-डुलने पर सूअर नीर की तरह उस पर लपकने लगे और एक मकड़ से उसका चार डालता है। दूसरे उपाय का यह है कि वह जंगल की ओर भाग जाय। सूअर का दूर दूर भागना संभव है पर साधन का महान्त कठिन है।



उतने में सूअर मनुष्य का काम समाप्त कर देता है। इसी रस्सा की आगो चुपचाप पड़े रहने दो में है।

दजाय में एक विशेष जानि के लोग जाति लगाकर से ही सूअर को मार डालते हैं। कुछ वर्ष हुए रावी-जलो किनारे इन लोगों को सूअर का शिकार करते देखने का मर लेखक को भी मिला था। सूअर को जाल में पड़ते वन लोगों ने इसे कीसी भरकर गिरा दिया और उसे मार कर मार डाला। इस कुरती में एक आदमी का हाथ व के दाँतों में फाँस भी दी गया था।

खरगोश और हिरण के शिकार में बाँझो, शिकारी कुत्तों से सहायता ली जाती है। एक समय एक शिकारी में सम्मिलित होने का मुझे भी मौका मिला था। वही खरगोश कुत्तों से बचकर छिप गया। परंतु ऊपर उड़ते बाँझ ने उसे देखा लिया। वह उस पर झपटा और कानों के पकड़कर उसे आकाश में ले उड़ा। अब तक कुरे वहाँ न पहुँचे गए वह उनी आकाश में ही उड़ाए रहा। उनके पंखों के ज़ोर से उसी पृथ्वी पर गिरा दिया और कुत्तों ने उसे दबाव दिया।

—कन

### पाँट-सहायक

बहुतांश—अपिचना, देना वैसे बना है। आक्रमण—हम सम्मिलित—दमन, अवशिष्ट जेब, बना हुआ।

### अभ्यास

—जो का उद्धार केन कर बना है, महेन में लिया।

- २—देव आदि की प्रकृति का कैसा प्रतिबिम्ब नहीं दीखता है !
- ३—इन जोड़वाने शब्दों को देखो और इसी के समान अन्य जोड़े-  
वाले शब्द लिखो —  
हृदयमय, बाना धूमि, ज्ञान राम, लम्बा चौड़ा ।
- ४—आचार्य लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो —  
दीन हृदय, मृत्यु का शासन करना है, निराला बनाना,  
धाम तमाम करना ।
- ५—अन्य वताओं और प्रयोग करके समझाओ —  
धीरे-धीरे, धीरे से धीरे, बड़े बड़े, बड़े से बड़े, बड़े के बड़े ।
- ६—यहाँ किन शब्दों के साथ दो वाक्यों की विभक्तियाँ लगाई गई  
हैं, और क्यों ! इसी प्रकार के तुन भी कई उदाहरण दो ।
- ७—भिन्न भिन्न मात्राओं से तीन तीन शब्द इन जाते हैं—  
अमल, देर, जाने, रैल, खुले ।
- ८—गुणना करो और समझाओ कैसे बने हैं—  
मुड़दौड़, बनावडी, समकारना, आस-पास, पापताना ।
- ९—मूल शब्द बताते हुए निम्न लिखो—  
पैटूक, अवशिष्ट, हिस ।
- १०—प्रथम अनुच्छेद का वाक्य-विश्लेषण करो ।  
संकेत—  
१—अन्य पशुओं के शिकारों का परिचय देना ।  
२—नदरों में ऐसी रियासतों को दिखाकर हाल बताना ।

## (७) आप

भजना भक्तनाइए गो आप क्या हैं ? आप कहते हैं  
 वात्र । आप तो आप ही हैं । यह कहाँ की आपदा आप  
 यह भी कोई पूछने का डंग है ? पूछा होता कि आप को  
 मेरा बतला देते कि हम आपके पत्र के पाठक हैं और ।  
 मायदा-मेवादक<sup>१</sup> हैं अथवा आप पंडित जी हैं, आप  
 जी हैं, आप सेंट जी हैं, आप लाया जी हैं, आप बापू  
 हैं, आप मियाँ साहब, आप निरं साहब हैं । आप क्या  
 यह तो कोई मरन को सीखि हो नहीं है । बाबक महाम  
 यह हम भा जानते हैं कि आप आप ही हैं और हम भी  
 हैं, यथा इन साहबों की भा लंबो धोनी, घमकीनी पाया  
 खुँदिई बैंगरग्या (मिरज़ई), सीधो भाग, विज्ञायती बाप,  
 दादी और साहबानी दबम हा कहे देखी है कि—

‘किम राग की है आप दवा कुछ न पूछिए,’

अच्छा साहब, फिर हमने पूछा तो क्यों पूछा ? इसी  
 के दुर्ग आप आप का ज्ञान रखते हैं या नहीं ? तब ‘आ  
 का अ’ अथवा ‘जय तय’ और क प्राप्ति दिन-रात ईश्वर  
 १७३३ के यह आप क्या है ? इसका उत्तर में आप रुझिगा

एक सर्वनाम है। जैसे मैं, तू, हम, तुम, यह, वह आदि हैं वैसे ही आप भी है, और क्या है। पर इतना कह देने से न हमको संतोष होगा न आप हो का शब्द-शास्त्र-ज्ञान का परिचय होगा, इससे अच्छे प्रकार कहिए कि जैसे 'मैं' का शब्द अपनी नम्रता दिखलाने के लिये धियों की धोनी का अनुकरण है, 'तू' शब्द मध्यम पुरुष की तुच्छता व प्रीति के सूचित करने के अर्थ कृत्ते के संवाधन की नकल है। हम, तुम संस्कृत के अहं और त्वं के अपभ्रंग हैं, यह और वह निकट और दूर की वस्तु वा व्यक्ति के यातनार्थ स्वाभाविक उच्चारण हैं, वैसे 'आप' क्या है? किस भाषा के किन शब्द का शुद्ध वा अशुद्ध रूप है और आदर हो में बहुधा क्यों प्रयुक्त होता है?

हुजूर की मुलाज़मत से अष्ट-नेइटेज़ा दे दिया होता दूसरी बात है, नहीं तो आप यह कभी न कह सकेंगे कि "आप लकड़ों फारसी या अरबी," अथवा "ओः ! इटिज़ एन इंगलिश वर्ड", "जब यह नहीं है तो लाहमन्दाह यह हिंदी-शब्द है, पर कुछ मिर-पैर, मूढ़-गोढ़ भी है कि यों हो ? आप छूटते हो सोच सकते हैं कि संस्कृत में अप कहते हैं जल को ओर शाखों में गिन्या है कि विधाता ने मृष्टि की आदि में उसी को चनाया था तथा त्रिदो में पानी ओर फारसी में आव का अर्थ गोमा अथ च रनिया आदि दृष्टा करता है, जैसे—“पानी उतरि गा नरवाग्नि का रस कहानी के मोल बिकाय”, तथा “पानी उतरिगा रज्जुन



[illegible][illegible]

खंडन नहीं कर सकता कि प्रेमी-समाज में "प्यार" का  
नहीं है, वही प्यार है।

संस्कृत और फारसी के कवि भोत्व और के  
 भवान और शुभा (र का बहुवचन) का बहुत प्रयोग  
 करते। पर इससे आपका क्या मतलब ? आप अपनी  
 कि 'आप' का पता लगाइए और न लगे तो हम बता  
 संस्कृत में एक आप शब्द है, जो सर्वथा माननीय हो  
 जाता है, यहाँ तक कि न्यायशास्त्र में प्रमाण-पुस्तक (ए  
 अनुमान, उपमान और शब्द) के चतुर्थ शब्द-प्रमाण का  
 ही यह निम्न है कि "आपपदेनः शब्दः" अर्थात् आप  
 का वचन प्रत्ययान्ति 'मा'ओं के समान ही प्रामाणिक हो  
 या यों समझ लें कि आप जन स्वयं, अनुमान और प्र  
 प्रमाण में सर्वथा 'मा'यित ही विषय को शब्द-बद्ध करते

इसमें जान पड़ता है कि जो मय प्रकार की विद्या, इ  
मय भाषणादि महगुणा मे मयुक्त हो वह आप है, और  
नागरी भाषा मे आप शब्द मयक उद्घाटन मे महज मे  
आ सकता, इसमें उसे मरन करके आप बना लिया ग  
और मयम पुरुष तथा अन्य पुरुष क अन्वयत आपर का  
करन क काम मे आना - तुम बहुत अच्छे मन्त्र्य हो।

न पद म पत ३ — सा कहने म सच मित्र या प्रभाव  
गङ्गा या न वैम । लक्ष्मी प्रसादन । विन गाना हों जाई  
द्वयशङ्क-कु. न लोकाचार्य पुरुष लभा अपना उचित सम्

निर्भर जय कहा जाय कि "आपका क्या कहना है, आप । वस सभी बातों में एक ही हैं" इत्यादि ।

अब तो आप नमस्कृत्य होंगे कि आप कहीं के हैं, कौन के हैं । यदि इतने बड़े बात के बत्तगट से भी न समझे कि आप इन छोटों से कथन में हम क्या समझा सकेंगे कि 'आप' संस्कृत के आप्र शब्द का हिन्दारूपान्तर है और गान्धीय अर्थ के सूचनार्थ उन लोगों (अथवा एक ही व्यक्ति) के प्रति प्रयोग में लाया जाता है जो सामने विद्यमान हों, बातें बातें करते हों, चाहे बात करनेवालों के द्वारा पूछे-बताए जा रहे हों, अथवा दो वा अधिक जनों में जिनकी चर्चा हो रही हो ।

कभी कभी उत्तम पुरुष के द्वारा भी इसका प्रयोग होता है, वहाँ भी शब्द और अर्थ वही रहता है; पर विशेषता यह रहती है कि एक तो सब कोई अपने मन से आपको (अपने तर्क) आप हो (आप हो) समझता है, और विचार कर 'देखिए तो आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता या तद्भूतता कहीं लेने भी नहीं जानी पड़ती, पर बाह्य व्यवहार में अपने को आप कहने से यदि अहंकार की रव समझता तो वो नमस्कृत्य जाता कि मैं काम अपने हाथ में किया जाता है और जो बात अपना मनमस्कृत्य कर जन के सम्मुख पेश किया जाता है तो मैं ही हूँ ।' किन्तु यह भी सत्य है कि हम आप



कर लेंगे। अर्थात् कोई संदेह नहीं है कि हमसे वा  
संपादित हो जायगा, 'हम आप जानते हैं' अर्थात्  
वतज्ञाने की आवश्यकता नहीं है, इत्यादि।

महाराष्ट्रीय भाषा के आपाजो भी उसीमें कि  
और भाषा के मिलने से इस रूप में हो गए हैं तथा  
वा न माने, पर हम मता मकने का माहस करते हैं  
को अरु (पिता, बोलने में अरु) और सुंपोव ।  
पाश (पिता) पोष (धर्म-पिता) आदि भी इसी भा  
हैं। हाँ, हमके समझने-समझाने में भी जो अरु  
के अरु (मरु) तो हमके दृष्टि हैं, क्योंकि इस में  
और दोहरे दोहरे अकार का स्थानापन्न (A) है, भी  
को "नकार" से बदल लेना कई भाषाओं की वा  
टी (T) में बदल का "नकार" दृष्टि हैं। फिर क्यों न  
मौलिकता कि अरु माहस हमारे 'आप' वा अरु  
के दृष्टि हैं।

इसारे प्रांत में बहुत-से अरु अरु के बाधक भी अरु  
को अरु कहते हैं, इसे कोई कोई भाग समझते हैं कि  
मार्गों के अरुवात का अरु है, पर अरु अरु समझते  
हैं। अरुवात माहस का अरु कहते हैं अरु और  
अरुवात का अरु में अरुवात का अरुवात अरुवात भी अरु  
अरु अरु अरु 'अ' अरुवात अरु 'अरुवात' की  
अरु है 'अ' अरुवात में 'अ' अरुवात अरु 'अ' अरुवात

श्रीन गुरुजीगो खो भीर रुस को टहो का ततो अर्धात् गरम  
 हा जाय । फिर अर्धा को अर्धा कहना किन नियम से  
 गा ! हा, आप में आप और अर्धा तथा अर्धा को मृष्टि  
 है, उन्को को अर्धावानों ने अर्धा से अर्धातरित कर लिया  
 गा, क्योंकि इनको घटमात्र में "अर्धा" (पं) नहीं  
 गा ।

श्री जिह्वा अर्धा, मास, दास, अर्धा, दास, दास आदि भी  
 श्री में निकलते हैं, क्योंकि जैसे पाणिनी को कई पाणिनी में  
 अर्धा को 'अर्धा' व 'अर्धा' से अर्धा लेते हैं, जैसे दास-  
 गा—दासगा और पाणिनी—पाणिनी आदि, जैसे ही कई  
 दासों में अर्धा को आदि में 'अर्धा' का लिया देते हैं, जैसे  
 जैसे अर्धा—अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा—अर्धाअर्धा अर्धादि  
 और अर्धा को आदि में अर्धा अर्धा का लेते भी हो जाता है,  
 जैसे अर्धाअर्धा का अर्धा (अर्धाअर्धा अर्धा अर्धा में देता)  
 अर्धा अर्धाअर्धा अर्धा में अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा भी  
 हो जाता है, जैसे, अर्धा—अर्धा, अर्धा—अर्धा, आदि । अर्धा  
 अर्धा को अर्धा, अर्धा को अर्धा अर्धा, अर्धा, अर्धा, अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा  
 अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा  
 अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा  
 अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा  
 अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा  
 अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा  
 अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा अर्धा

अब तो आप समझ गए हैं, कि आप क्या हैं ? अब  
 समझों तो हम नहीं कह सकते कि आप समझदायी के कौन  
 हैं आप ही को उचित होगा कि हमड़ा-खदाम की समझ  
 यमानी क मही से मोझ लाए, फिर आप ही  
 समझाया कि आप "कौन हैं ? कहाँ के हैं ? कौन के हैं ?"  
 यह वा न हा मकं और लेख पद के आपें ही बाहर हो  
 तो हमारा क्या अपराध है ? हम केवल जी में वा  
 "शाबाश ! आप न समझों तो आपों (अपने) को के  
 पही छै' (है) ।" है । अब भा नहीं समझें ? बाह !  
 (त्रिपुनकरीय में) — १० प्रणमनायक

### पाठ-महाशयक

दासनाथ—दशरथनाथ, पानीशर—श्यामसुम्नानी, ५  
 लाली—शयः—नीचे + शयः—उत्तेजना, ऐसीवैसी—सो  
 दुम्न—कुम्न कपटार, आत्र पुन्य—शिव, समझ  
 शिवनाथ पुन्य, अपराध—ही, अत्रि—अत्रि, पुन्य शयः ।

### अन्वय

१. यदि आप हम को समझें तो आप हमें ही समझें

२. अत्रि

३. अत्रि

३—यहाँ किस शैली की भाषा है, इसका वर्णन करते हुए आप से दिखलाओ।

४—दिए गये गीत का अर्थ समझाओ और उसका भाव व्यक्त करें।

महाभारत, दशम स्कंध, अध्याय १०५, श्लोक १०५।

५—पावन-विशेषण का अर्थ समझाओ।

गीता १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०।

६—इसके अर्थों लिखें। इसका अर्थ समझाओ।

इसके, यह, यह, इसी, यह, यह।

७—इस वाक्य में जो शब्दों का अर्थ समझाओ।

इसके अर्थ समझाओ। इसका अर्थ समझाओ।

८—इस वाक्य में जो शब्दों का अर्थ समझाओ।

इसके अर्थ समझाओ। इसका अर्थ समझाओ।

९—इस वाक्य में जो शब्दों का अर्थ समझाओ।

इसके अर्थ समझाओ। इसका अर्थ समझाओ।

१०—इस वाक्य में जो शब्दों का अर्थ समझाओ।

इसके अर्थ समझाओ। इसका अर्थ समझाओ।

११—इस वाक्य में जो शब्दों का अर्थ समझाओ।

इसके अर्थ समझाओ। इसका अर्थ समझाओ।

## (८) शिकागो का रविवार

शिकागो संसार के प्रसिद्ध नगरों में से एक है। जहाँ व्यापक जमीन-प्राप्ति-कारकों के द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय है। अमेरिका के बड़े बड़े कारखाने, पुस्तकालय भी यहाँ हैं। इन कारणों से हर एक काम के लोग काम करते हैं। इनके बड़े प्रसिद्ध नगर के लोग अपने अस्वच्छता का समर्थन करते हैं ? वे अपना दिन कैसे बहलाने हैं ? इस नगर के रहने लायक क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर हम इस संसार में देने हैं। आइए, आपका शिकागो की ओर करावे, इसके अतिरिक्त अतीव दृश्य दिखाने, और आपको बतलावे कि इस नगर में कौन कौन स्थान दर्शनीय हैं। साथ ही इस नगर के निवासियों की रहन-सहन का अंश भी देंगे जो कि हमारे आपका अमेरिका के इस प्रांतवासी की जीवनशैली के विषय में जो कुछ जान हो जाय। इस काम के लिए हम रविवार का दिन चुना है। सभी की सहिष्णुता का हम इस संसार में बर्तन करेंगे। हमारे हमारा असाध्य या मित्र हो जाएँ और आपको यह भी याद हो जायगा कि शिकागो निवासियों रविवार की छुट्टी किसे मना है।

रविवार छुट्टी का दिन है। यह दिन = १५२ घंटे का है। यह दिन = १२४५ मिनट का है। यह दिन = ७४७०० सेकंड का है।

शिकागो में जहाँ जहाँ ईसाई लोगों का राज्य है, सब कहीं मूलों और दुकानों ने रविवार को खुदो रहती है। परंतु रविवार में खुदो किस तरह माननी चाहिए, यह बात ईसाई-धर्मावलंबियों के बीच रहें बिना अच्छा तरह नहीं अनुभव की जा सकती।

ईसाई-धर्म में रविवार को काम करना मना है। इसलिए शिकागो में सब दुकानें, स्कूल, कारखाने आदि इन दिन बंद रहते हैं। क्या निर्धन, क्या धनवान, क्या नौकर, क्या खाने, क्या बालक, क्या इठ, क्या खो, क्या पुरुष सबके नियम मात्र खुदो है। १०ई या ११ बजे निश्चय समय पर प्रातःकाल प्रायः सब लोग अपने अपने गिरिजाघरों में जाते हुए दिखाई देते हैं। वहाँ ईश्वराभिषेक के बाद घर लौट कर वे भोजन करते हैं। फिर कुछ देर आराम करके सैर को निकलते हैं।

शिकागो बहुत बड़ा शहर है। संसार के बड़े बड़े शहरों में इसका तीसरा नंबर है। यहाँ एक "फास्ट मूविंग" मर्यादा लगावधर है। यह निश्चित भोजन के कितारे शिकागो विश्व-विद्यालय से थोड़ा ही दूर पर है। रविवार को नवरे तो बजे से शाम के पाँच बजे तक, सबको यहाँ लुप्त सैर करने की आज्ञा है। इसलिए इस दिन यहाँ बड़ा भीड़ रहती है। आठ नौ घण्टे के बाद-शानिकार्य ऐसे ही स्थानों से बिदा का आरंभ करते हैं, क्योंकि यहाँ पर संसार की इन सब अद्भुत वस्तुओं का संग्रह है, जो शिकागो के प्रसिद्ध नागरिक नेत्रों में इच्छा की गई थी। यहाँ यह बात ध्यान दिनाई गई है कि हरदी के







ऊपर प्राणियों का जीवन, प्राकृतिक नियमों के  
 प्रकार वर्तमान व्यवस्था को पहुँचा है। इन  
 पदार्थों को भिन्न भिन्न कमरों में दरज-दरजे  
 क्रमिक-विकास अच्छी तरह बतलाया गया है।  
 रूप से ज्ञात हो जाता है कि उत्तरीय समान  
 किस प्रकार भिन्न भिन्न प्राणों अनुष्ठा में  
 बदलते हैं। किस प्रकार प्रकृत माना वर्ष के १५  
 भागन देती है। उत्तराध्वस मरनेवाले शीघ्र  
 भीतर बने हुए १२ मीटर का ऊँचा तारु दिखाए

यहाँ यह ज्ञान है कि प्राणियों का विकास  
 क प्राकृतिक नियमों के अनुसार दरज-दरजे का है।  
 जैसे प्राणियों का विकास होता है। किस प्रकार  
 प्राणियों के विकास में भिन्न भिन्न प्राणों का  
 विकास होता है। प्राणियों के विकास में भिन्न  
 भिन्न प्राणों का विकास होता है। प्राणियों के  
 विकास में भिन्न भिन्न प्राणों का विकास होता है।

इस प्रकार प्राणियों का विकास होता है। प्राणियों  
 के विकास में भिन्न भिन्न प्राणों का विकास होता है।  
 प्राणियों के विकास में भिन्न भिन्न प्राणों का विकास होता है।  
 प्राणियों के विकास में भिन्न भिन्न प्राणों का विकास होता है।  
 प्राणियों के विकास में भिन्न भिन्न प्राणों का विकास होता है।

म का संतर : आसतर्क को तजान में एक पुनः  
कर को का निकल, इसका जाना ही इस सब परि-  
पुन कायद हुआ ।

अनादिकाल से ब्रह्म-विद्या, समाधि-विद्या, संतु-  
लना-विद्या आदि अनेक विद्या विद्याओं के सर्वोच्च को  
ले विद्यमान हैं। "एक एक दो काज" एहो का जित  
कीजिए और कुछ काजिए भी। जित के बीते  
के लक्ष्य के निहारणों का विचार जाते हैं। वे ब्रह्म-  
विद्या के बहाने वही इतनी संतुलना प्राप्त कर लेंगे कि  
दो से दोन दोन तक श्रुति के इतने में भी नहीं

[illegible]

अनुसार वहाँ उसे उधरवा पहुँचाई गई है और उसकी रक्षा में गई है। उधर देशों के कई वृक्ष वहाँ देखने में आते हैं। देश का वनस्पति-विद्या-संवेद्यो बहुत-सी पार्श्व वहाँ मान्य हो जाती है।

स्थानों के सिवा बहुत-से और भी स्थान, लोगों के बैठने बैठने, ईमान-येवने के लिये हैं। शिकागो बहुत बड़ा नगर है। इससे नगर-निवासियों के आराम और सुख पवन की प्राप्ति के लिये, बाय बीच गलियों में "युनियार्ज" नामक विहार-स्थल हैं। वहाँ की गलियाँ अपने देशों की जैसी होती हैं। गलियाँ क्या एक वाहान हैं। परधर के मकानों के प्रायः दोनों किनारों पर, पाँच फुट के करीब सड़क से ऊँचा रास्ता लोगों के चलने के लिये बना हुआ है। बीच की सड़क गाड़ों, घोड़ों, मोटर आदि के लिये है। खुले मकानों और बीच सड़कों के कोनों पर भी हवा के साफ रखने और गृह आदिमियों के मनोरंजन तथा लाभ के लिये छोड़ी छोड़ी दूर-दूर विहार-वाटिकाएँ हैं, जहाँ बैठने के लिये बेंचें रखी रहती हैं।

काम में थके हुए स्त्री-पुरुष रात्रि सायंकाल वहाँ दिखते हैं, क्योंकि और स्थानों में गाने, बजाने और जल-विद्य आदि के लिये छोड़ा-बहुत खर्च करना पड़ता है जो जो आमदनी के लोग नहीं कर सकते। उनके लिये ऐसे स्थान स्थानों और अजायबघरों में घूमने की स्वतंत्रता है। यत्न किया गया है कि सबको इस स्वतंत्र देश में आनंद प्राप्त हो सके। का अथवा मिले। वहाँ जो धन व्यय किया जाता है

भारीरक्त धार मानसिक दाना प्रकार की इत्रि के लिये,  
किया जाता है ।

यह ना दुर्दिन की घात, अथ रात की सुनि । यहाँ  
यह-ने नाटकपर, प्रदर्शनया धार समाज है, जहाँ अपनी  
अपनी रधि के अनुसार लोग रात का जाते हैं । शिकागा में  
लोग रात-र रात को गिरजा में जाते हैं । रात का भी यहाँ  
उपदेश, गायन और हरिकीर्तन होता है । यहाँ एक जगह  
“हाइट सिटी” श्वेत नगर है । बहुत-से लोग वहाँ जाते हैं ।  
इस जगह का श्वेत नगर इमलिये कहते हैं कि यहाँ बिजली  
की शुद्ध राशनी होती है, जिससे रात का भी दिन ही-सा  
रहता है, इसके विशाल द्वार पर बड़े मोटे मोटे बिजली के  
प्रकाश के अक्षरों में “दि हाइट सिटी” लिखा हुआ है ।

बिजली की महिमा यहाँ रूढ़ ही देखने को मिलती है ।  
स्थान स्थान पर प्रकाशमय रंग-विरंग अक्षर-चित्र बने हुए हैं,  
जो निमट निमट में रंग बदलते हैं । इस श्वेत नगर के भीतर  
अनेक मनोरंजक स्थान हैं । कहीं पर गाना हो रहा है, कहीं  
पर वृद्ध ‘हार्मो’ में नाच हो रहा है, कहीं “सरकस” का  
तमाशा है । दुनिया भर के तमाशा करनेवाले यहाँ आते-जाते  
हैं । गर्मी के दिनों में वे, तीन ही चार मास में, हजारों  
रुपए कमा लेते हैं । यह स्थान एक कंपनी का है । उसके  
नोकर भारी दुनिया में तमाशा करनेवालों को लाने के लिये  
घुमा करते हैं । भारतवर्ष के यदि दो तीन अच्छे अच्छे पहलवान,

किसी देशी कंपनी के माध्य, अमेरिका में भावें तो इतने, रुपए कमाकर ले जायें। हमारे देश में अभी लोगों ने हाथ पैदा करने का टग नहीं मीगा।

एक माथारण मनुष्य गंगहस्तान से आकर, हिंदुस्तान में शिक्षावनों-द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करके लायों बड़ा कर जाता है, परंतु हमारे स्वदेशी कारीगर, पहलवान, वादक आदि सभी इस प्रकार जाने का माहस हो नहीं करते। अमेरिका में कुरती का गौरव बढ रहा है। यदि इस समय कोई पहलवान घोड़ा-सा रुपया खर्च करके इधर आवे और किसी अज्ञात कंपनी को मारफ़ल कुरती दे, तो लायों रुपयों के बारे-बारे हो जायें।

इस श्वेत नगर में रविवार का बड़ा भारी मेला होता है। गाइडों आ-पुर्खा में लदी हुई जाती हैं। गज़ांगे रंगे इकट्ठे होते हैं। रात को ८ बजे से ११ या १२ बजे तक मेला लगा रहता है। यह स्थान केवल गर्मियों में खुलता है, बसों गार्डों में गीत के काग़ज़ बढा कोई नही जाता। गीत-बसों के लिये नगर के आस-पास अनेक स्थान हैं, जहाँ और भी के समान बस खींचे जाते हैं।

रविवार का दिन हमारे नगर में लोग इसी तरह व्यस्त रहते हैं। अमेरिकी लोग इस दिन को विश्राम के दिन मानते हैं। अमेरिकी लोग इस दिन को विश्राम के दिन मानते हैं। अमेरिकी लोग इस दिन को विश्राम के दिन मानते हैं।

पाठक को यह कहना न चाहिये, पर और ऐसे विचार ही नहीं-  
 बल्कि जो विज्ञान-विदों से सम्मानित हैं जिनका हमारे आदर्श-आदर्शों  
 को मोड़ है : वे अपने अद्वयता को, अपनी लक्ष्मियों को जिन  
 तरह विचारते हैं : भोग, योग, तप, संन्यास, धर्म, उपासना और  
 अन्य के सम्बन्ध में विचार रख कर, इन को वे मान्य ही नहीं  
 मानते। यद्यपि कुछ ऐसे विचारों से भी हमें इन विचारों में  
 दृष्टि मिले, अतः वे लोक-कथाओं को जिनमें हमें आज  
 के समाज में नहीं। जहाँ के विचारों में हमें ऐसे विचारों में भी  
 कम मात्रा में हमें विचारों में हमें भी भगवान् ही बताते।  
 (विज्ञान-विचारों में)

—विज्ञान-विचार

### विज्ञान-विचार

विज्ञान—विचार, विज्ञान—विचार, विज्ञान—विचार, विज्ञान—विचार  
 विज्ञान—विचार, विज्ञान—विचार, विज्ञान—विचार, विज्ञान—विचार  
 विज्ञान—विचार

### विज्ञान

- १—विज्ञानों में विज्ञानों के विचारों में विज्ञान है।
- २—विज्ञानों में विज्ञानों के विचारों में विज्ञान है।
- ३—विज्ञानों में विज्ञानों के विचारों में विज्ञान है।
- ४—विज्ञानों में विज्ञानों के विचारों में विज्ञान है।
- ५—विज्ञानों में विज्ञानों के विचारों में विज्ञान है।

६—नए शुद्ध बनाकर प्रयुक्त करो—

बराबर, बरबराद, बज्जीगर, नगर, बड़ा ।

७—अग्निम अनुष्णदेह को मलिन कर में लिप्यो ।

८—इस पाद से तुम्हें क्या दिखाएँ मिथानी हैं !

९—इस पाद के आधर पर तुम झगने वहाँ बुद्धिनों के स्पर्श  
की कैसी व्यवस्था कर सकने हो छोरे पैसी की जानी चारिद !

१०—प्रथम अनुष्णदेह की दिखाएँ चुनो और उनकी वद स्वास्वा की

११—इस पाद का आरंभ निकाच कर उसे झगपी छोरे से दह  
कर में प्रवर्धन करो ।

संकेत—

१—शिकागो आदि स्थान नक़शों में दिखाना ।

२—भिन्न भिन्न प्रकार की विद्याओं का परिचय देना ।



## (८) काली-दमन

प्रभुत वे: न न निविंद-पुंन को.

विमोहना की करता प्रवृत्त है।

हरज जाया उसका मुनें हा .

उने वल्लभा बहु-प्राप्ति-प्राप्त है ॥१॥

विचित्र नेने लुप्त है जरेहु में,

स्वभाव नेना उनका कर्पूर है।

निदल्लभा है निने नितात ना,

प्रजापुत्रां मन की विदुषता ॥२॥

स्वरूप नेना विविधा न भव्य है,

न बाधन नेने निमक सनात है।

सरोव न्यारा वल्लभा सदैव है,

सुख तो भी सुख के प्रभाव में ॥३॥

प्रभुत नेना प्रजापुत्र-पुत्र है,

नीति वल्लभा उनको प्रभाव है।

नेने वल्लभा वल्लभा वल्लभा है

नेने वल्लभा वल्लभा वल्लभा है

नेने वल्लभा वल्लभा वल्लभा है

नेने वल्लभा वल्लभा वल्लभा है





कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।

कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।

कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।  
 कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।

कर्म-सूत्रम् । अथ कर्म-सूत्रम् ।

कदाग-शीशोपरि राजती रही,  
 सु-मूर्ति सामामयि श्री मुकुंद की।  
 विकीर्ण-कारी कल-ज्याति चरु घे,  
 भताव-उत्कुल्ल-मुन्वारविंद था ॥

विचित्र थी शीश-किरीट की प्रभा,  
 कमो हुई थी कटि में सुकाइनी।  
 दुकूल में शोभित कांत कंध था,  
 विशंयिषा थी वन-माल मोच में ॥१९॥

अदोश को नाथ विचित्र रीति से,  
 भवदल में थे वर बार को लिए।  
 बजा रहे थे मुरली सुदुर्दुः,  
 प्रशोदिनी, मुग्धकरी, विमोहिनी ॥२०॥

ममल सपों सँग रयाम ज्यों कड़े,  
 कर्जिंद की नैदिनि के सुभक्त से।  
 लड़े किनारे जितने मनुष्य थे,  
 सभी महा शक्ति-भान हा उठ ॥२१॥

पिलोऊ जानो जनता भयानुरा,  
 एकद न एक त्वभिन्न सार में।  
 ... का ...  
 ... ॥२२॥

प्रज्जु के अद्भुत-वेणु-नाद से,

मत्तर्क-संचालन से सु-चुल्ल से :

एक वशा-भूत ममस्त सर्प से,

न अल्प होतं प्रतिकूल से

अगम्य अन्तः समीप गैल के,

जहाँ बड़ा कानन है

कृदुव के माघ वहाँ अहीरा है,

मन्दर्प से के है

न नाग काली तब से दिग्गद

हृदय वमी से

ममोद लोटि मव लोग

प्रमोद नाग

प्रेमप्रवाग से)



-भीकृष्ण और यमुना जी के पर्यायवाचक शब्द चुनो, साथ ही  
विरुद्धों के शब्द बताओ—

उत्तम, प्रीतिरात्र, सुगन्ध, रसाल ।

-भिन्न भिन्न अर्थ बताकर उदाहरण दो—

रसाल, चारों, बाल, घड़ी, भीन, हल ।

-अरभरा रूप लिखकर प्रयुक्त करो—

मत्त, फूलार, हिलोल, दक ।

त—

-भीकृष्ण के सन्ध में ऐसी ही अन्य कथाएँ बनाना ।

# (१०) सर चंद्रशेखर वेंकट रमन

रमन महोदय का जन्म ७ नवंबर, सन १८९७ ई. में त्रिचनापल्ली में एक साधारण बंश में हुआ था।



पिता की वही किसी भी शिक्षक थे। रमन के जन्म के कुछ ही बाद वाश्टेयर में चापको गणित के सर का स्थान मिला था। चंद्रशेखर वेंकट रमन की शैक्षणिक यात्रा के अन्तर्गत पंडित जी साहू ने भी अनुमान (रमन)

का जी. सी. रमन

वाश्टेयर में रमन महोदय की वैज्ञानिक कामकाजी। उन्होंने सन १९२० में भौतिक विज्ञान विभाग में चापको इतिहास करने की शाय की थी, परन्तु तब तक रमन ने इन्हें करने का कहना कि 'मैं नहीं'। सन १९२० में रमन 'चापको' कहते हैं।

रमन महोदय १९३० में ३२ वर्ष के







### अभ्यास

मी० पी० रत्न का चरित्र जानन कैसा था ? इनकी प्रवृत्ति  
जानने में विशेष ध्यान !

जैसे 'रत्न' नवीन का वाक्य में नाम जाना !

के जीवन की प्रगत, पत्र-प्रकाश हुई, अब ये क्या करते हैं ?

के जीवन में क्या उपदेश, 'मूल्य' है ?

आशुतोष के नाम में क्या ज्ञान है ?

नौ गवनों में प्रयुक्त करा कौन भाषण : लखी—

प्रतीक समझ उठा, मेधा पर विरहाम न करना, छान पड़ना,  
पद पर आरुढ़ होना, मुक्त बूढ़ से ।

शब्द है, इनके मूल शब्द बताओ—

बैठार, सम्मानन, भीतर, आगामी, सराही ।

न भूलत क्यों मैं । मुक्त करो—

पैठक, दार, वर, महोदय, साथ, उपाधि ।

जैसे अनुबोध का वाक्य-विरलेषण करो ।

रत्न के अपने आवाकरी में क्या सम्मान प्राप्त हुआ है ?

दशम आदि का भाषण समझना ।

ती प्रकाश ज्ञान आदिधाराओं का हाल बताना ।

आशुतोष आदि का परिचय देना ।





धगोर्चा, मेने) आदि में परियों के समान नाचती और हमें आनंद देती हैं, इसी कारण कुछ जीवों से बची रहती हैं।

अनेक जीव किसी-न किसी प्रकार हिंसक जीवों से बचती रक्षा करने में समर्थ हो जाते हैं; पर इस पाठ में केवल उन कीड़ी के वर्णन करने का प्रयत्न किया जायगा, जो स्वयं रचकर भयवा अभिनय करके शत्रुओं की भाँति में घुस भाँकते और अपना काम चलाते हैं।

अनेक पालकों के देखने में आया होगा कि कपड़ा का काँड़ा, किसी का दाँध लगते ही, अपने शरीर को गुड़ गुड़ा कर गालरूप बन जाता है। इसी प्रकार जिंजाई नाम का लाल काँड़ा, जो परसात के आरंभ में दिखाई देता है, उस का सकल पाते ही गुड़गुड़ा हो निरपल हो जाता है। इसका अभिप्राय क्या है? एक तो यह कि उस रूप में शरीर के सामान भग साधे दाँधर दाँध से बचते हैं और दूसरे यह कि उसे निरपल देख शत्रु यह समझकर कि वह मर गया है उसका पाछा छोड़ देता है।

एक दालनुमा काँड़ा होता है। उसकी पालाको और भी तारीफ़ करने में लायक है। जब वह किसी पत्ते या छाल पर बैठता तब अमर कट डैंगली भर उठावे, बस वह तुरंत सिंकुड़का और दाँध का रूप धारण करके इस सफाई में जोचे गिर जाता है, तब कोई दाँध लगे नहीं पाता। इसी पर निम्न में वह

घास-प्यास का आश्रय ले इस धुरेवा से छिप जाता है कि उगकी पत्ता लगना प्रायः सम्भव ही हो जाता है। ये तीनों प्रकार के कीड़े मकारों नहीं करते तो क्या करते हैं !

श्रुतु के अनुसार, अपने रंग बदल कर, घास-प्यास आदि में छिप जानेवाले कीड़ों को बहुरूपिये कीड़े कह सकते हैं। गिरगिट में यह शक्ति होती है कि जिस स्थान में जा बैठता है उस स्थान के रंग को भलक अपने शरीर में ले आता है। इतनी जल्दी अपने रंग में परिवर्तन करने की शक्ति टिट्टू में यद्यपि नहीं है, परंतु वह भी श्रुतु के अनुसार भेस बदल लेता है।

परसात में जब चारों ओर हरियाली रहती है तब उसका रंग भी हरा रहता है। कार्तिक मास में यह पक्षी घास का रंग लेने लगता है, और जब चैत्र, वैशाख में हरियाली तथा घास बिलकुल नहीं रहती तब वह बहुरूपिया मटिया रंग का हो जाता है। इस प्रकार रंग बदलने से उसका यह फायदा होता है कि वह अपने को बिना प्रयास छिपा सकता है और अपना जाति व शत्रुओं से बच सकता है। उनके पंख भी इस प्रकार के पंख रहते हैं मानो दाढ़ कोपल डाल से डाल में ही निकले हो और धमक न कह लोकर फैले न हो। जब वह वर्षा-श्रुतु में डाल पर बैठता रहता है उस समय उसे पहचान लेता बड़ा काम होता है। दूर से देखने में तो धोखा होता ही है।

क समय हमें हरे रंग की एक इल्ली नोच के पेट के एक १०-१२ इंच लंबी से बँधी हुई नज़र आई कि जिसकी











स्वाग-पत्र में उसने अपने पुत्र को ही उरराधिकारी नियुक्त  
था। किंतु राष्ट्र-दल ने फिर बर्बोनि बंशजों को ही राज्य दिया।

अब बर्बोनि ने इसका जहाज घेरना चाहा।  
जहाज में चला गया और कहने लगा कि मैं सेंगरेजों  
की गरज लेता हूँ। सेंगरेजों ने उसे छेकर मेट  
हाथ में आत्मन्य बंदी कर दिया।

—राजकीय

### पाठ-सहायक

गवदम्बज—गवद वा उच्चाव के चिह्नवाला अक्षर,  
अक्षर, आतक —अ, इन्द्रा, मय, स्तम्भ—लमा,  
अतः अक्षर अक्षर है (सामान्य), इसी प्रकार पुत्रवादी।  
नदी, सेना, नीमागच्छ—(नीमा + अक्षर + अक्षर) नीमा के  
अक्षर, देशाक्षर—आने के अक्षर, वृद्धि—बोद्धा—  
मुक्ति—आदि अक्षर देवो, निबिह—अक्षर,  
अक्षर ।

### अभ्यास

१ - वाटरम्बू के युद्ध का क्या मुख्य कारण था, हाथ कर के लिखें।  
२ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ३ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ४ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ५ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ६ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ७ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ८ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? ९ - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए? १० - युद्ध के बाद क्या हुआ? इनसे सेंगरेजों के क्या  
फायदे हुए?

॥-काले के मीलेनिक नम कल कलने हन सुन मे सुन कल कल  
बते।

१-कान्हे मन्त्री ॥ सुख करो उत्तः मन्त्र्य ज्ञाने लक्ष्मि विना विना  
मन्त्री मन्त्री-

[illegible]

८ - मैत्रेयस्य वा सति सां तुहे देवः इत्यपि तुल्यं ।

• —सूर्य मन्त्र जपे करी हरे भक्तों के—

[illegible][illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. —————  
 2. —————

संकेत—

[illegible]

ה'תש"ח  
בית דין



ने एक प्रकार की अद्भुत चंचलता और क्रूरता भी थी।  
 पहले तो वह एक साधारण लुटेरों का कार्य करता था फिर  
 अपने नेतृत्वों के सहित तबलार हाथ में उठाई। सिपाही बन, क्रमशः  
 बढ़ते करके वह सेनापति बन गया और कार्यज (अफ़ाका  
 महाद्वीप में एक प्राचीन समृद्ध नगर था) निवासियों के साथ  
 मन में विजय होने के कारण उसका प्रभाव इतना अधिक  
 बढ़ गया कि वह सिराकू के राजसिंहासन का अनायास  
 ही अधिकारी बन बैठा। अब डायोनीशियस के बल, प्रताप और  
 एवं आदि का ठिकाना ही न रहा। गाम्बानो तुलसीदास जो  
 ने बहुत ठोकरें खाई हैं—

नहीं कोट अस जनमा जग माहीं ।

प्रभुता पाइ जाहि मद माहीं ॥

यद्यपि यह राजा विद्वान्, विचारशील और चतुर था, तथापि  
 इसकी दृष्टि के अनुसार उसका स्वभाव क्रूर और अविश्वामनी  
 होगा था। उसने अपने राज्य में एक ऐसा कारागार बनवाया  
 था जहाँ से वह कैदियों के पारस्परिक वार्तालाप को सुन सौते  
 से सुन सकता था। राजा को आर से उसे इतना अविश्वामनी  
 था कि उसने अपने शयनागार के चारों ओर चौड़ा दीवार  
 लुटवा रक्खा था और खड़े दर के पुन के स्वयं अपने हाथ  
 में प्रतिदिन निजान्त और दृष्ट करती थी। इसका नाम एक  
 एक व्यक्ति ने यह इच्छा प्रकट की थी कि तुम्हारे एक ही दिन











हायोनोगियस् की आज्ञा के अनुसार लोगों ने डेम्न के कार्य के प्रारंभ करने का प्रयत्न किया ही था कि इसी बीच में अत्यंत गीबता-पूर्वक विधियस बढ़ी आ पहुँचा। उनके घातकों का सूचना दे दी कि मैं निज अपराध के कारण एक ईह भागन के लिये उपस्थित हो गया हूँ, डेम्न का घात भी के लिये मत करो।

डेम्न और विधियस ने परस्पर एक दूसरे को धमकाया किया। विधियस का इस बात का हर्ष था कि वह डेम्न का घात बचाने के लिये यद्यपि उपस्थित हो गया, परंतु उसको इस बात का शोक हुआ कि क्यों विधियस यद्यपि उपस्थित हो गया और उसे (डेम्न को) मित्रता का परिपूर्णता लागू ईह भागन न देने दिया। धन्य है! सबकी मित्रता ही दानी है। जिसमें विधागारम-सारा विद्वान् दार्शनिकों के गतात् मन्दाय में ऐसा आत्मत्याग क्यों न देख पड़े।

मर्चो मित्र एक दूसरे की सहायता के लिये प्रादुर्भाव को कुछ भी नहीं समझते। परंतु इसी मित्रता कहीं देख पड़ती है। जहाँ मर्चो धर्म है वहाँ मर्चो ऐसा ही रहता है। प्रत्येक कार्य में और सब भी उसे अनूठ उदाहरण दर्शाते हैं। मर्चो मित्र एक दूसरे का विद्वान् दार्शनिकों के गतात् मन्दाय में ऐसा आत्मत्याग क्यों न देख पड़े। मर्चो मित्र एक दूसरे की सहायता के लिये प्रादुर्भाव को कुछ भी नहीं समझते। परंतु इसी मित्रता कहीं देख पड़ती है। जहाँ मर्चो धर्म है वहाँ मर्चो ऐसा ही रहता है। प्रत्येक कार्य में और सब भी उसे अनूठ उदाहरण दर्शाते हैं।

शरीरों को शिथिल रख चरित्र देख शक्ति विस्मित हुआ। उसने  
 तीक्ष्ण का अपराध क्षमा कर दिया तथा स्वयं ही उन दोनों  
 को एक और मित्र बन गया।

- हारिमगल मिश्र, एम० ए०

**पाठ-सहायक**

॥१॥—देवदेव ते, ब्रह्मोमान्य (ब्रह्मो ! + भाग्य) — धन्य भाग्य ।  
नाम्य—नमो ।

## अभ्यास

- १-इस कहानी का सारांश क्या है ? मित्र के कर्तव्य क्या है ?
  - २-मौ० तुलसीदास ने मित्र के कर्तव्य रामायण में लिखे हैं, इस  
कथा पर उसकी वे चौगुनियाँ टेंदों जो घटित हो सकें !
  - ३-यहाँ जो पद्य उद्धृत किए गए हैं वे कहाँ से लिए गए हैं  
उनके भाषायाँ लिखो ।
  - ४-इस पाठ की भाषा कैसी है उसकी विशेषताएँ मोक्षहरण लिखो ।
  - ५-श्यामीशिवम् के चरित्र को कैसा भलाक यहाँ मिलती है ?
  - ६-यहाँ ने वह सूचन क्या बढ़ाकर लिखी जिनसे राजा ने एक  
शिखा दी ।
  - ७-प्रथम अनुच्छेद को मस्तेर ने लगाने और उनमें दिए हुए  
विभागों के नियम दिखलाओ ।
  - ८-'मुगतने के अर्थ' किस कारक की दशा में है, यहाँ अप्रत्यक्ष  
का प्रयोग किस अर्थ में किया गया है । इस कारक की छह  
विभक्तियाँ लिखो ।
  - ९-नए नए शब्द बनाकर भाषा में प्रवेश करने हुए प्रयोग करें ।  
पुरुष, अन्तः, स्थान, वस्तु, कार्य ।
  - १०-अंतर बताओ—अनुचर, अनुभव, अनुमान, अनुप्रास,  
आदान, प्रधान, दान, आदि ।
- केत-**
- १-मुद्रांगद की कथा बनना

(१६) घेतार का तार

यूरोप में विज्ञानी का सर्वोच्च काम आविष्कार इतनी में हुआ है। यह बात ईसा के जन्म से पूर्व की है। इस बीच वे सैकड़ों मंदिरों बान गईं और विज्ञानी की शक्ति को कई तरह से भी उद्घाटित किए गए। विज्ञानी की शक्ति से तार से पुल मैगना, गृह, राज-वस्त्र और नगर आदि आविष्कार हुए और और कल-कारखानों का चलना आविष्कार के किनारे हो लेने वाली काम किए जाते हैं। पर चौदहवीं सदी के प्रारंभ में एक अविश्वस्य शक्ति का आविष्कार हुआ है। यह विज्ञान के उसकी शक्ति का अनुभूत उपयोग है। आधुनिक विश्व इस आविष्कार ने विनष्टता को दूर कर दी है। इसके लिये यह भी है कि जिस इतनी में सर्वोच्चम दिव्य शक्ति आविष्कृत हुई थी वही इस मत आविष्कार का प्रेरण बन हुआ है। विज्ञानाचार्य माफ़ांनी की यह उद्घाटना है।

माकनी के बहुत कमनामका मरदा के रोप भाग में, ईस  
हार्डिंग नामक एक तमोन विमानवला में विमानों की रफ्तार  
कई एक मिनट में एक मिनट में विमानों की रफ्तार  
में एक मिनट में एक मिनट में एक मिनट में एक मिनट में  
एक मिनट में एक मिनट में एक मिनट में एक मिनट में



जिसे नरंग-बाड़ी रंघ से संयुक्त कर दिया जाता है। - २३  
 रंघ में जो तद्धितों वाहित होती रहती हैं वे रंघों  
 के जानने के रंघ से टकराती हैं। उनके टकराते ही  
 रंघ उन्हें स्थिति लेता है और मीकैतिक भाषा के रूप  
 रूपान्तरित कर देता है। जो तार वायु वहाँ बैठा रहता है  
 वसे प्रचलित भाषा के रूप में निरूपित होता है। यह निरूपित  
 अद्भुत और आश्चर्य को वात है।

एक बार पक्ष मारने में जितना समय लगता है उसे  
 समय में अमेरिका में ईग्लैंड या ईग्लैंड से जापान तक एक  
 पहुँच जाती है। अमेरिका या आस्ट्रेलिया में किसी निरूपित  
 घटना के पटित होने के एक घंटे बाद ही विज्ञान के एक  
 घंटे में उनकी स्थिति स्पष्ट होती है। यह मनुष्य के इन्द्रिय  
 का ही प्रमाण है। उसका प्रमाण से वे सीरस, जड़, ईग्लैंड  
 लोहे के रंघों तार-रंघरूपी अपने हाथ फैलाए हमारे निरूपित  
 दिग्दर्शन से स्पष्ट हो देते हैं।

वेतार-द्वारा स्वर भेजने के लिए दो बातों की आवश्यकता  
 होती है। पहली तो आकाश-मंडल के ईश्वर-भाव में स्थिति  
 पैदा करना और दूसरे उन लोगों के आवाज को प्राप्त करना  
 तद्धित-रंग पैदा करने के लिए बहुत-से लए उपायों के द्वारा  
 किए जाने पर भा हेमरी हार्डिंग का आविष्कृत स्थिति अद्भुत  
 कारी रंघ का ही उपयोग सर्वत्र होता है। उसमें ही निरूपित  
 शुद्ध है। यह बात अत्यंत ही एक अद्भुत मूल-वस्तु है।

र में संगठन और शक्तिशाली बना लिया गया है। दार्जिलिंग में तो केवल उसे कुछ या बहुत सहितरंग दूर भेजने के लिए बनाया था। अब तो किसी वायर्स' स्टेशन में छपस पैंट्स सहितरंग १२,००० मील तक प्रसारित होता है।

रक्त तो रक्त ही है, अंतः समुद्र के वचःरक्त पर तरने-ले जहाजों में भी वेतार की विजली से देगा का हाल-चाल विविध रूप में पहुँचता है और जहाज के प्रेम में छप जाता। सबसे चाय पीने के साथ ही यात्रियों का उसे अप्रधार पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। आजकल कई जहाजों आन्तरिक प्रेम हो गए हैं, जिनमें किसी भी सांकेतिक या में भेजी गई सूचक अपने आप छप जाती है।

वेतार की विजली से सांकेतिक भाषा में सूचक भेजकर हुए आनंदित और विस्मित तो अवश्य हुआ, परंतु उसके स्वयं का यह ठिकाना ही न रहा जब उसने वेतार की विजली बातचीत करने की भी तैयारी की। अब पर बैठे कोई विविधारी, रेल-यात्री अथवा समुद्र-यात्री अपने खा-पुत्रादि पालाफ का सुख प्राप्त कर सकता है और इसके लिये बहुत से भी नहीं करना पड़ता है। साधारण गृहस्थ भी अपने में यह यंत्र लगा सकते हैं। इसके लिये कोई विशेष स्थान या विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शहर के मकानों में लगो १५ विजली की यंत्रा कवल



प्रकारा देने को ही सामर्थ्य नहीं रखती, शक्ति उसमें सन्निहित रहती है। बेतार के साधारण बिजली की बत्तों की तरह कौन के कानून बिजली के तार-ईं लगे रहते हैं। यह कानून इन्हीं साधारण बिजली-बत्तों के कानून से कुछ बड़ा रहता है, इतना ही है कि उसके भीतर के तार-ईं में धातु का एक और टुकड़ा लगा रहता है। इसी बत्ती के भीतर में वह सन्निहित प्रवाहित होकर शब्द का दूर दूरी पर पहुँच देती है।

तार और धातु-पत्र के संयोग से बिजली की बत्तों का भार्थ्य रूपान्तर मानव-जाति की एक अद्भुत कौशल है। आकाश में बढ़ती हुई बिजली को आकर्षण करने के मार्गों के गगनचुम्बी हथों और सुदीर्घ तार-धुनों की आवश्यकता नहीं होती। केवल गोलाकार रूप में तारों का एक लकड़ा के संभे पर लटकाने से आकाश प्रवाहित होनेवाली बिजली को उस बिजली-बत्ती से बेतार का टेलीफोन चुंबक के मदद स्वीच होता है।

लकड़ा के संभे पर लटकते हुए गोलाकृति तारों से टेलीफोन का संबंध होना आवश्यक है। यदि वह बिजली बत्ती में संयुक्त बेतार के टेलीफोन के साथ लकड़ा के हों में चपेट हुए कुछ तार का समूह करके मोटर-गाड़ी में लगे

८ किया जाय तो सैर करते हुए भी शहर की सुन्दर  
दृश्यों का भोग है। तंदन भयवा न्यूयार्क के बड़े बड़े  
मिनी बिल्डिंगों का सदैव चारों तरफ से आवी रहती  
होती नज़र में यह संघ लगवा लेते हैं।

वेतार द्वारा शहर के संघ में एक और नया प्रकार सिद्ध  
है। सड़क के किनारे से आस-पास के जहाज़ों को इस  
के द्वारा पकड़े सज्ज भेजा जाता है और तदनुसार उनकी  
गति रोक कर ली जाती है। जहाज़ों का तूनात आदि का  
दफ्तार इन संघ के द्वारा दे दा जाती है।

(जुल ३)

—हर्बर्ट

### पाठ-सहायक

नई शब्द—अरब, उद्भावना, दर—अन्त—उत्पत्ति, उत्पत्ति,  
नगर, नाविक—(नौसेना से) नौकर, विपदाही—अपत्ति  
के अन्तर्गत, सौंदर्य—सौंदर्य, सुखित—अन्यथा, उद्गमन  
है—अन्यथा, साहित्य—विपत्ति।

### अभ्यास

वेतार के तार में क्या सम्बन्ध है। इसका सम्बन्ध क्या है।  
—इसके सम्बन्ध में क्या कहना है। इस सम्बन्ध में क्या है।  
वेतार के तार का क्या है। इस सम्बन्ध में क्या है।  
इसके सम्बन्ध में क्या है।

—वेतार के तार में क्या सम्बन्ध है।



## (१७) दुःख-सौ-व्ययना

१. अनादि-सुख

१. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 २. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥१॥  
 ३. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 ४. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥२॥  
 ५. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 ६. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥३॥  
 ७. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 ८. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥४॥  
 ९. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 १०. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥५॥  
 ११. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 १२. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥६॥  
 १३. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 १४. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥७॥  
 १५. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 १६. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥८॥  
 १७. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 १८. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥९॥  
 १९. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ।  
 २०. अनादि-सुख, अनादि-सुख, अनादि-सुख ॥१०॥





दोहा नं० १, ८, ११, १२ ।

३ - दोहा नं० १, ५, ९ का सार्वभौम भावार्थ स्पष्ट करने-  
का भाषा इनमें काव्य-संज्ञा की कथा विद्यमान है ।

४ - शुद्ध छन्द कथायां—

मान, वरीहरा, रूखंडु, द्विष, कीर्ति ।

५ - कथा अंग है, मोदादण राउ करो—

अंग, अंग, अंग, नमान, कामान, नमान, नमान, विनय, विनय, विनय ।

६ - वहाँ आप हुए उरु छन्द पुनो छीर उनके हवन से ही  
छन्द प्रयुक्त करो ।

७ - वयोवृद्धा की छन्द लिखो—

नीर, पाहन, वाचिना, मेहन, छात्राण ।

८ - निम्न मन्त्र छंदों में प्रयुक्त करो—

छो, गति, नील, कुल ।

९ - निम्न निम्न छन्द उद्योगार्थि मन्त्रादि वस्तुओं को कर  
छन्द प्रयुक्त करो—

मदन, मन्त्र, कुल, वस, वसन ।

१० - छोटी वस्तु में करन १२ करके वरदानका करो—

वेदन, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान, वरदान ।

११ - वीर वीर में करन १२ करके वरदानका है, छोटी वस्तु ।

मदन

१२ - वीर वीर में करन १२ करके वरदानका है, छोटी वस्तु ।

२—शिव-वरात

नगे सँवारन सकल सुर, बादन विविध विमान ।

दाहिं मगुन मङ्गल सुभग, करहिं अप्परा गान ॥

-सिवहि संभुगन करहिं सिंगारा ।

जटा-मुकुट अहि-मोर सँवारा ॥

हुँदल-कंकन पहिरें व्याला ।

तन विभूति पट केहरि छाया ॥

समि ललाट, सुंदर सिर गंगा ।

नयन तीन, उपवीत-भुजंगा ॥

गरन कंठ, उर नर-सिर-माला ।

असिव घेप सिवधाम कुपाला ॥

फर निरुल अरु ईषरु बिराजा ।

चले विसभ चदि बाजहिं याजा ॥

देखि सिवहिं सुर-तिय मुमुक्षाहीं ।

धर-लायक दुलहिन जग नाहीं ॥

पिण्ड, पिरंषि आदि सुरदाता ।

चदि चदि बाहन चले वराता ॥

सुर-ममात्र सब भाँति धनूपा ।

नहिं वरात दूलह-अनुरूपा ॥

शे.—पिण्ड कदा अम विहँसि तथ, धानि सकल दिमिराज ।

विहग विहग होइ चनहु सय निज निज स'द' ममा ॥



पौ०—यह अनुदाहि बरात न भाई ।

हैंसी करैदहु पर-पुर जाई ॥

विष्णु-वचन सुनि मुर मुमुकाने ।

निज निज सेन-मदित विनगाने ॥

मन ही मन महेस सुकाहो ।

हरि के व्यंग वचन नहिं जाई ॥

अति प्रिय वचन सुनत प्रिय करे ।

सुंगहि प्रेरि सकल मन हरे ॥

सिख-अनुमामन सुनि सब आय ।

प्रभु-पद-जमज सोस विन्द नार ॥

नाना श्रावण नाना बेग्या ।

बिहँसे सिख-ममाज निज देमा ॥

कोउ मुख-हीन विपुलमुख काहु ।

विनु पद-कर कोउ बहु-पद-बाहु ॥

विपुल नयन कोउ नयन-बिहीना ।

रिह-पुष्ट कोउ अति वन सोना ॥

हृद—मन भीन कोउ अति पान पावन कोउ अपावन ॥

मूख करान कपाल कर मख मय सोनित ॥

मर स्थान-मुचर-मुगाल-मुख मन बेव अनादि ॥

बहु अतिम त-पमाव जोगि-जमाव दानन नहिं ॥

मो०—नारहिं गावहिं गीत, परम तंगी भूत मख ।

देखत अति विचरित, सोनहिं वचन विविध विनि ॥



चौ०—नगर निकट बराह सुनि आई।

पुर खरभर सोभा अगिआई॥

करि बनाय सब बाइन नाना।

थले लेन सादर बगवाना॥

दिय दरपे सुर-मेन निहारी।

हरिहिं देखि अति भय सुगारी॥

मिय-ममाज जष देखन लागे।

विहरी थले बादन मय भागे॥

धरि धारज तट्टे रट्टे मयाने।

बाहुक सब लै जीव पगाने॥

गए भवन पुछहि पितु-माता।

कहहिं बचन भय-कषित गाथा॥

कहिय कहा कहि जाइ ॥ बावा।

जम कर भारि किभी बरिभावा॥

बर दोराह बरद अमबारा।

व्याज-कपाहुविमूषय

छाया ॥

हृद—तन छार व्याज-कपाहु भूषन नगन अटित मय

मंग भूज-भन-पिमाच-जागिनि विकट मुन रगटे

मैः त्रियल रहिहि बराह देखत पुन्य बह तेरिअ

देखिहि सो बना-विवाह पर पर बाढ अम करिअ

—मनुष्य महेस-भमाज सुख, जननि-जनक मुहुर्काहिं ।

बाल बुझाए विविध विधि, निहर दाहु हर नाहिं ॥

नय मे)

—महेस-भमाज सुख

### पाठ-महायक

शिवजी—जनेऊ, कर्मव—कर्मवर्तनी, मित्र—मित्र, बाल—बाल  
विशेष—बाल, दाहु—दाहु, कनुहा—कनुहा, हर—हर  
१, पौन—पौन, विनिम—विनिम, हरनी—हरनी

### अनुवाद

—एक जी का कैसा सुख जब हर नाहिं ।  
हर हर मे क्या विधि है ?

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

—जन्मी बाल के कहे नाहिं ।  
हर हर मे ।

- १.—देवी क्रियाएँ हैं—ध्यास्या कर इनके रूप लियो—  
 सामान्य वर्तमान, निजि छोर दूर्यन्त—  
 मरगण, पराने, करेइहु, वेनिहि ।
- १०.—देवी मन्त्राएँ हैं विशेषताएँ लियो—इनते विशेषण बनाये  
 प्रयोग कगे—  
 बनाउ, जगुनाई, बगा, ममात्र ।
- ११.—कभी कता वा तुम भी महर कणन कगे छोर दिशो ।  
 में छाने के लिये मैत्रो ।
- १२.—शु. न. २ को लड़ी खोजी में छानुदिन कगे ।
- संकेत—
- १.—हम क'पता वो समझाकर राम का ज्ञान कराना ।  
 २.—ध्याय कथा है हमका परिचय देना ।

# (३) संसार में विचार

मानव जी विचार करने वाला प्राणी है। वह अपने  
 जीवन में जो कुछ भी देखता है, सुनता है, या  
 सोचता है, उसे अपने मन में धारण करता है।  
 यह धारण करने की शक्ति ही विचार है।  
 विचार करने से ही हम अपने जीवन में  
 सुधार ला सकते हैं। हम अपने गलतियों को  
 पहचान सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं।  
 हम अपने भविष्य के लिए योजना बना सकते हैं।  
 हम अपने मन को शांत रख सकते हैं।  
 हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।  
 हम अपने समाज में सुधार ला सकते हैं।  
 हम अपने देश को प्रगतिशील बना सकते हैं।  
 हम अपने विश्व को बेहतर बना सकते हैं।  
 हम अपने मानव जाति को उन्नत कर सकते हैं।  
 हम अपने जीवन को अर्थपूर्ण बना सकते हैं।  
 हम अपने मन को स्वस्थ रख सकते हैं।  
 हम अपने जीवन में खुशी पा सकते हैं।  
 हम अपने समाज में सौंदर्य ला सकते हैं।  
 हम अपने देश को समृद्ध बना सकते हैं।  
 हम अपने विश्व को प्रेमपूर्ण बना सकते हैं।  
 हम अपने मानव जाति को सभ्य बना सकते हैं।  
 हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।







हिमी की चर्मभर वाले मुनकर उनकी ही में ही मियाज  
ना पापदमी, और न्याय-संगत वाले मुनकर उनका रक्षण  
करना दुराग्रह है। लोगों को इन दोनों में बचना चाहिए।  
वर्णन बाली-जाय में दुराग्रह के मन का समर्थन करने पर  
उनकी प्रतीति में दा-वार गच्छ कहने में पापदमी का कुछ  
आभाव रहता है, नचावि, इनकी 'पापदमी' के बिना सं-  
व्य नीरस और अग्रिम भी हो जाता है।

इसी प्रकार अपने ही मन का समर्थन करने और दुराग्रह  
के मन का स्थान करने में भी कुछ न कुछ दुराग्रह आता  
है, जो भी उनका दुराग्रह मध्य और गिरित समाज में फैला  
है। हिमी अनुश्रुति मध्य की अकारण निरा दुराग्रह  
गिरित का विरुद्ध है और वर्तितक को मध्य तथा हिमी  
होगा बहुत अनादर की दृष्टि में देखेंगे हैं।

विद्वानों के समाज में मन-वेद होने के अनेक कारण दुराग्रह  
होते हैं। इसविषय पर हिमी के मन के स्थान करने का दुराग्रह  
अनेक नर दुराग्रह ही लक्षणपूर्वक समाज-आवेता करके अपने ही मन  
स्थान करता चाहिए। स्थान या एसी अनुराई में हिमी  
हि विरुद्ध मन-वेद के बुरा न लगे। दान-योग में दुराग्रह के दुराग्रह  
का दुराग्रह बर्णन और दुराग्रह न हो। उनके ही दुराग्रह  
और ही दुराग्रह करके दुराग्रह के दुराग्रह का दुराग्रह दुराग्रह में  
दुराग्रह का दुराग्रह मध्य में दुराग्रह दुराग्रह में दुराग्रह  
दुराग्रह का दुराग्रह दुराग्रह का दुराग्रह दुराग्रह का दुराग्रह दुराग्रह



## (१६) लक्ष्य

युवा पुरुषों को चाहिए कि ससार-से प्रवेश करने के पहले वे अपने चित्त में सोचें कि हमारा जीवन का लक्ष्य क्या है ? हम क्या हुआ चाहते हैं और उसके लिये हमें पास क्या क्या सामग्रियाँ उकड़नी हैं ? क्या जिस ससार-से में जीवन-युद्ध के लिये हम आगे बढ़ते हैं उसके लिये हम फर्क ही तक सुसज्जित हैं ।

सैनिकों की यह सोच है कि युद्ध में आने के पहले वे अपने करने के नियमों का भली भाँति स्मरण लेते हैं, और जो वे युद्ध करने आते हैं त्यो ही त्यो उनके माइस, तेज और निरुक्त की वृद्धि हाता जाता है । अतः मैं वे युद्ध-विद्या में ऐसे निरुक्त हो जाते हैं कि फिर उन्हें शत्रुओं से हारने की विशेष संभावना नहीं रहती । ससार-से में जीवन-युद्ध के लिये जो विद्यार्थी सभी मैन्यदल को पाठशास्त्रों, विज्ञानों और विधिविधानों में शिक्षाएँ दो जाते हैं, उनकी व्यवस्था भी ठीक इसी प्रकार की है इसलिए हमारे से प्रवेश करने के पहले सभी को धन, माइस और योग्यता की परीक्षा कर लेनी चाहिए ।



है कि हमो ज्यट-केर में मेरी युवावस्था के बर, साइन करके  
 नज मभा नष्ट हो गण, तब घट वे पयरा कर किमो एक एक  
 क पथिक बन जाने हैं और जहाँ तक बन पड़ता है वह सब  
 है। किं कुछ हो दूर पहुँचने पहुँचने उन्हें युवावा मा जाने  
 है और ३ किमी कार्य के करने में असम्य हो जाने हैं।

इसी नियम पुण्डमान लोग संवत्-निमनाने मनुष्यो के  
 कामों की श्रुतना लड़कों के मेटों के साथ करत हैं।  
 बावक नियम नए नए गिरानों को देखकर पुराना को का  
 नही करत, बार बार आवन के लयन को बदलनेवाले हू  
 भी टांक इसी प्रकार करत हैं, और वस्तुओं के गुण-गण  
 विचार न कर उनकी बाहरी समक-सम ही पर हू।  
 सुमा जान हैं। इसलिये पहल आवन के किमी एक लय  
 निहार किन किना ही हम पथ म चलने में बाँ बड़े हल  
 संभावना हानी है क्योंकि हम मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य  
 समुदाय समन करत हूने की चेष्टा हो जाता है और  
 मारा और जीवन परभाव हो करने जानता है। कि  
 नियम म श्रमियों ने कहा कहा है—

‘‘जो मनुष्य अपने कामों का लक्ष्य जानि म लक्ष्य  
 जान है, निरवय है कि वे हमें सम्य दृष्टि में हू।  
 सम्य हूने, क्योंकि लक्ष्य जानि म कामों का लक्ष्य जान  
 काम हमें सम्य न कर स्यात है।’’

इस, जो कि वह पथ में निरवय हो जाने लगे हू।

काम को मारना प्रस्तावित हो गया है। जिसमें हो ले न बिना,  
 जिस कारण और दूर को रहते भा नौभारः-नरको को दृष्टि में  
 के जाने, क्योंकि संसारो जीवन केने आरंभ करना होता है  
 शुरूवात जाने। सब है 'आमः' शब्दों कामों का आरंभ दुःख-  
 शीतल है किन्तु काम को एक बार आरंभ करके और कुछ  
 को एक तत्त्वज्ञ से उत्तम में दृष्टि रहने से मन काम हो उत्तम को  
 के रहने मान्य है और जो दृष्टि उन कार्य को शक्ति होती  
 कामों को ही त्यों फिर का भा आनंद प्राप्त होता जाता है।

किन्तु कार्य के आरंभ हो को देखकर उन काम के करने-  
 में ही दुःख को घमंकारी और सहन-शान्ति विहित हो  
 जाते हैं। दंगे अब हम लोग किसी हवेली को ताड़। यादों  
 कि जो बहुत उनको पहली दृष्टि उगाड़ता है उनको को उन  
 को का ध्यान बहुत मानते हैं, क्योंकि पहली दृष्टि के उगाड़ने  
 रों और दृष्टि का उगाड़ लेना बहुत का जाता है। इन्हीं  
 पर दृष्टि छोटे कामों से आरंभ करत करने दृष्टि पर काम  
 में हो जाते हैं, किन्तु पहली ही दृष्टि का बहुत मान्य क  
 करने दृष्टि गिराए पर दृष्टि का बहुत का जाता है, किन्तु  
 कि दृष्टि के दृष्टि गिराए, किन्तु काम का बहुत का जाता है  
 रहती। बिना नौभारों को मान्य पर दृष्टि ऊपर का जाता है  
 न कोई नौ नहीं बढ़ सकता। दृष्टि ऐसा के  
 के पहली छोटे छोटे कामों के बिना किए एक बार  
 दृष्टि कामों के करने में समर्थ हो।







कार्य-मात्र ही उत्तम है, परंतु यदि समका करनेवाला साधु और सुचरित हो तो कोई काम भी नीच या अपमान देनेवाला नहीं हो सकता। किंतु वह यदि अपमाधु वा कुचरित हो तो चाहे कैसे ही मझे काम का क्यों न धारम करे, दुर्लभ ही उस काम का कलंकित करके आप भी अपमानित और लज्जित हो जाता है। यही कारण है कि सामान्य कामों से भी बड़ों की बड़ाई और बड़े कामों से भी नौनों की मौला डकड़ हो जाती है, क्योंकि निज चरित्र से ही मनुष्य अपने किए हुए कामों को बनाता, वा बिगाड़ता है।

पृथ्वी में सभी लोग बड़े दुष्मा चाहते हैं, किंतु वे सब अपने कोई बिराहो ही करते हैं। यम हमों से वे सब उन्नत नहीं हो सकते। अतएव, भाई ! यदि तुम उन्नत दुष्मा चाहते हो तो समार-सोः के द्वार पर गढ़े होकर विभारा कि तुम्हारा बिल किस ओर भुक्तता है। यम, उमा के अनुसार अपना एक मध्य गिर करके लगाभार काम करने लगा। विश्राम, धैर्य और अपनी मारी शक्ति से उस काम को करने का यत्न करे कि ना तुम्हें आप ही हम करने का उन्नति का देखकर अपमान होगा, नुम मुझो जग हीर पर हम काम का बिना किए कदापि बुधबाप न धैर्य सक ।

यम ने लोग मुझ बहकावना कर हम उस काम के योग्य नहीं हो किंतु हम उन्नत कहने पर काम न करके अपने मित्रों के

कई-कई सौ हीन हो करीब काम करने लगे, दरिद्रों को  
लाभान्वित करने से एक से एक दिन बड़ सित्त हो। हो  
सकते हैं। कोई काम कठिन या दुस्तराई हो तो भी व्यवहार  
कर्मका और उसको व्यवहारकता पर ध्यान देकर तुम उसे  
हो सफल और हीन से करो कि जिससे उन्हें पुरा पुरा लाभ  
मिले। पहले कामों को योग्य कार्य यदि दुस्तराई भी हो तो भी  
जिसे तुम चाहें मानकर कर दो उदा। हाँ इस विषय में  
जिसे ही लाभमान रहती कि व्यवहार कर्मक व्यवहार ही  
जो इस में अभिमान से न फुल जाओ बरन् सदैव एक हीर  
व्यवहार रह कर कामों कामों को करो। इस विषय में  
मैं निम्न का उपदेश है कि—

"मनुष्य स्वभाव को भाव और चरित्र को लक्षणार्थ कार्य,  
कर्मिक ऐसा करने से तुम भाव और प्रभाव-लक्षण होओ। हेतु  
कर्मिक निराश न हो, क्योंकि जो मनुष्य व्यवहार में लक्ष्य  
को अपने व्यवहारों से प्राप्त करता है उसका हीर हवा को भाव भाव को  
लक्षण व्यवहारों से व्यवहार के लक्ष्य से व्यवहार ही हीरा जाता है।"

भाव है, जो मनुष्य व्यवहार के व्यवहार व्यवहार पर व्यवहार को  
मिले लक्षण-भाव से व्यवहार कर्मक ही भाव हीरा से व्यवहार  
व्यवहार व्यवहार से ही भाव भाव से ही व्यवहार से व्यवहार भाव  
व्यवहार है, व्यवहार ही हीरा व्यवहार ही व्यवहार ही हीरा  
व्यवहार है व्यवहार व्यवहार व्यवहार ही व्यवहार ही हीरा  
व्यवहार ही हीरा है व्यवहार से व्यवहार ही हीरा है व्यवहार ही हीरा















## विजय छंद

## भगद

पेट चट्टा पनना पत्रिका चढ़ि पात्रकिहू चढ़ि मोह मट्टाये ॥  
 चौक चट्टा चित्रमारा चट्टा गज-बाजि चट्टा गढ़ गर्व चट्टाये ॥  
 शोम पिमान चट्टाई रक्षा कहि 'कमव' सो कवट्ट न पट्टाये ॥  
 पंनन नाहि रक्षा चढ़ि चित्त सो बाहव मूढ पिताहू रट्टाये ॥२१॥

## भुङ्गगत्रयाव छंद

रावण—निराग्यो जु भैया क्षिपी राज जाको ।  
 दियो काहि कै जू कहा श्रास वाको ॥  
 लिए धानरालो, कटौ बाव लो से ।  
 सो कैसे लरे राम संगाम मोमी ॥२२॥

## विजय छंद

## भगद

हाथी न साथी न पोरै न चेरै न गाव न ठाव को ठाव वि<sup>१</sup>  
 तात न मात न पुत्र न मित्र न विन न तीव कहूँ संग रहै  
 'कमव' काम का राम चिमारन और निराम न कामहि<sup>२</sup>  
 पन न चन अनी पन आर अरु नारु अरुलाई जैहै ॥२३॥

## भुङ्गगत्रयाव छंद

## भगद

हरे नाराय अनाथ ना नर नरुदय आहि नरुदहि  
 परदाह नाली न दारिद्र्य का, मुकम नरवध कन्है जवो को

दोहा—जैद करायी मैं खेल को, हर-गिरि 'केसवदास' ।

सौप्त चक्षुषं आपने, कमल-समान सदास ॥२५॥

## संदर्भ ग्रंथ

प्रांगद—जैसो तुम कहव उठायो एक गिरिवर,

ऐसे फोटि कपिन के बालक उदावर्दी ॥

फाटे जो कहत सांस काटत घनेरें पाष,

मगगर के खेलें कदा भट-पद पावहीं ॥

जीर्णो जो सुरसगण सापश्रुपि नारिही कां,

समुभक्तु एव द्विज नावे समुभाषर्ही ॥

गह्वी राम-पाय सुग्न पाय फँसै सपी तप,

सीताजू को देहु देव दुन्दुभी पजावहीं ॥२६॥

ਬੰਗਰਾਏ ਓਂਦ

**रायख**

वर्षा-जपा १५ दिन १५०० मंत्रों अष्टावक्रा मन्त्र देव महर्षी ॥

सिया न ईहं' एतन्मयं त्वं' अमन्तुः भूतं अमाननी करतः ॥ ७ ॥

**विषय सूची**

2015年1月1日

9467 11. 10. 1954 11. 10. 1954 11. 10. 1954

दाइ नर - १५ - २० १० - १८ - २० - २० - २०









(२७) वर्तमान हिंदी-साहित्य के गुण-दोष

वर्तमान साहित्य प्राचीन काव्य से तीन परम प्रधान बातों में भिन्न है, अर्थात् बड़ा वाणी के प्रचार, गद्य-पद्य और श्लोक-पयोगों विषय-समाचार में । ये तीनों बातें वर्तमान साहित्य को मूल ही गौरवान्वित करती हैं । श्लोकों-कारों विषयों को आदर देनेवाली नवीन प्रथा का स्थिर हो जाना तो एक बहुत ही बड़ा सम्पादन-कार्य है । तैसी देश-दशा होगा, वैसी ही कविता भी सम्भावित होगी । प्राचीन काल में जीवन-दाह की निर्वन्ता में श्लोकों-कारों विषयों की आठ दस बार कवित्रनों का विमोचन ध्यान नहीं था, यद्यपि वह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि अन्य बातों से उन्होंने साहित्य-गणिता पूर्णता को पट्टा दी ।

इस समय क्रायक दुख के जन्मका की रचनाएं विगमनवा  
इन्हीं विषयों में भरी रहती हैं, अतः क्रायक क्रायक के अनेकानेक  
कविजन अनेक एक ही मन से यह कहते चलते हैं। इस समय  
का दुःख बहुत बड़ा है, क्रायक का दुःख अधिक है। मु  
उनके अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन  
कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन  
अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन अनेक कविजन





होते हैं। इन लोगों के कारण बहुतों लाग पुराने अशुद्ध विचार से दृष्टि के भ्रम पर और भी बढ़ हो जाने हैं। यह दाव पक्ष-प्रथा का तो नहीं, याम् आजकल के हमारे मानसिक अरुपतन को ही प्रकट करता है।

भाषा में उन्नति करने करते अथ अष्टा रूप मद्रण कर लिया है, परंतु फिर भी उसमें एक दोष यह है कि अथ तक उन्नत भाषा के लिखने में लोग संस्कृत-भाषा के कठिन शब्दों का लिखना ही अत्यन्त ममभते हैं, और ऐसे शब्दों के लिखने का प्रयत्न नहीं करते जैसे अंगरेजों के बड़े-बड़े लेखक लिखते हैं और बहुत दिनों से लिखते आए हैं। अथ तक गद्य में दर्शन, रमायन, विज्ञान, कारबार आदि के अर्थ विशेषता से बने हैं, परंतु साहित्य-अर्थों अथ गद्य-अथ बहुत ही कम देख पड़ते हैं। गद्य में अर्थकारों, रसों, प्रथम-अर्थों तथा अन्वय काव्यांगों को लाकर उसे उत्कृष्ट एवं कठिन बनाने का अभी पूरा क्या प्रायः कुछ भी प्रयत्न नहीं हुआ है। आशा है कि इस ओर भी हमारे लेखकगण ध्यान देंगे।

अथ तक हमारे लेखकों ने भाषा के गूढ़ाकरण में से दृष्टा-अर्थ का लेना ही आवश्यक जान रक्खा है, परंतु इन बात पर सदैव ध्यान रखना चाहिए कि अन्य भाषाअर्थ किसी भाषा को उड़ा नहीं बना सकता। से कृत और भाषा में बहुत दिनों से सर्वत्र अवश्य बना आता है, परंतु उसको वृद्धि भाषा-गौरव वर्जित कदापि नहीं हो सकती। जैसे मनुष्यों के लिये

लिखनेवाला एक आवश्यक गुण है, वैसे ही वह भाषाओं में लिखे भी है। किंतु आजकल के लेखक इस अनुपम गुण के लिए पर भाषा को संस्कृत की संवकिनी बनाना चाहते हैं।

हमारे भाषा की श्रुतिमधुरता उसकी एक प्रधान महिमा है। संस्कृत में मिलित बर्णों के आधिक्य से पुराने साधारणों में कुछ दोष बहुत कम माना है, परन्तु हमारे भाषा में जो काल में साधारणों एवं कवियों ने मिलित बर्णों को प्रयोग में बहुत ही कम आने दिया है और बहुत-से ऐसे शब्दों में कुछ-कुछ माना है। इस कारण प्राधान्य रचनाओं में भाषा का ऐसा अभाव है कि अन्य भाषाओं की भाँति यदि हमें भाषा को जहाँ भाषा कहते हैं तो जहाँ हमें साधुता की भाँति समझ कर देखें हैं।

हमारे भाषा के कवियों ने आजकल इस अनुपम गुण का प्रयोग ही विस्मृत कर दिया है। एक ही शब्द को दो-तीन बार प्रयोग करने का शौच बहुत ही कम माना है, और दूसरे शब्दों का प्रयोग करने से भी बचने का प्रयत्न नहीं करते हैं। और इससे भाषा की श्रुतिमधुरता हीन हो जाती है।

हमारे भाषा के कवियों ने साधारणों के शब्दों का प्रयोग ही विस्मृत कर दिया है। एक ही शब्द को दो-तीन बार प्रयोग करने का शौच बहुत ही कम माना है, और दूसरे शब्दों का प्रयोग करने से भी बचने का प्रयत्न नहीं करते हैं। और इससे भाषा की श्रुतिमधुरता हीन हो जाती है।

एक क संघों को पुराने, समय-प्रतिकूल और भद्देसिन समझते हैं। आजकल की पद्य-रचनाओं में शास्त्राचक्रमय तथा सुप्रबंधाभाव के बड़े ही विकट दृश्य घा जाते हैं।

शास्त्राचक्रमय कवियों का एक शाखा से दूसरी शाखाओं पर बार-बार कूदने का समान रचना करने का कहेते हैं। किम्वं भाव का नेकर उसे कुछ दूर तक चलाना चाहिए और उसके संबंधा भावों एवं उपभाषाओं को उसके समीप स्थान देना चाहिए, जिससे रस की पूर्ति हो, न यह कि एक भाव का कथन-भाव करके दूसरे पर कूद जाना। यदि मूर्ख की किरणों का बर्णन उठावे तो उनकी मालाओं, संकथा-बाहुल्य, तेज, नेत्रों के रक्त-पौध करने का वन, कमल खिलाना, ससार में वृद्धता के हास या वृद्धि से शत्रुओं का बदलना, फलों का पकाना, रसों का उत्पन्न करना, संसार की जीवन-वृद्धि करना आदि अनेकानेक गुणों में से कुछ भी कहे बिना हमारे भाव पर बंद से कूद जाना साहित्य-शक्तिहीनता का ही प्रमाण देगा।

सुप्रबंध गुण वर्णन-पूर्णता में ही आता है। जिस को उठावे उसका सांगोपांग कथन करना एक अनन्त प्रदर्शक है। यदि किसी में बहुत ऊँचे-ऊँचे फे लाने का वन न हो तो केवल सु-बंध से माना जायगा। आजकल बहुधा लोग न तो ऊँचे लाने हैं और न सुप्रबंध का आर हो कुछ ध्यान देते। सुख का अर्थ आनन्द का निरादर एवं



ये दांतों वाले चिल्लकृत अशुद्ध हैं, ऐसा प्रकट है और मभा मानने हैं, यहाँ तक कि उपर्युक्त प्रकार के लेखक भी बचनद्वारा यही कहने और समझने हैं। वे इमों कथनानुसार अपने भा हैं, परंतु वास्तव में उनके आचरण उनके उपर्युक्त दोष विभाग में तो एक में डाल देने हैं। ये अपने आपका भूलें हुए हैं, और यही तक अपने हुए हैं कि पराये विषयों एवं मित्रता का स्वाम्य करने ही न केंचन कहने, बरन समझने लगें हैं। इस प्रचंड मानसिक गग (स्वभाव) का निराकरण तथा हो सकता है जब मनुष्य अपने इत्येक मत के कारणों पर सदैव विचार रखे और समझता रहे कि उन कारणों में से उनके करने हैं।

यदि कोई शर्मविषय को दुःखसाधन से भा संवहर बनाने में उसे समझता पादि कि हममें उन दांतों के गुण-दोष मभा में की पात्रता है या नहीं और हमने उनके समझने में पूरा धन जो किया है या नहीं? यदि इन दोनों बातों में से एक का भा उत्पन्न नहीं है तो उसे उपर्युक्त अज्ञानजन्य मान को अपना मत न समझ कर पराये का समझना पादि।

इसमें यही गूँथ का बार पाद हो दिना में हुआ है कि जब हम अनुचित का वचन प्रसारित है कि जो जो अपने मतों को दूसरों से मिलाता है, वह हीन माना जाता है।

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

प्रतिरिक्त और कुछ लिखते ही नहीं और जिस ग्रंथ का वे स्वतंत्र कहते हैं, प्रायः उनमें भी औरों में चोरी और सोन-जोरी निकल आती है।

सारांश यह है कि आजकल गद्य की उन्नति तो हुई है, परंतु समुचित नहीं, नाटक-विभाग अभी होनाबक्या में है, हौं पढ़ता हुआ देख पड़ता है, पद्य का अवनति है और लेखकों में प्राचीन भारतीय अथवा नवीन पाश्चात्य प्रणालियों के अनुसरण में अंधपरंपरानुकरण का भारी दोष है।

—“सम्राट्”

### पाठ-सहायक.

उद्गायक—(उत् + गाय) - उद्गायकी, दिनोद्दिन—प्रतिदिन।  
इसी प्रकार रातोरात। ककराता - कड़वा, मांगोपांग—(मञ्जु +  
अंग-उपग) मधुर स्तुरण—कृष्ण निष्कण्ठा, मुक—कंठ के पार-  
स्वात पदों का सम्यक् प्रचुरता—आधर, दीर्घाद्वैप-जन्य—दीर्घों-  
जन्य से उत्पन्न। इस प्रकार ‘अतिशयोक्त्य’ काटि रत्न रत्ने। पाश्चता—  
उत्पत्ति सम्यक् अंधपरंपरानुकरण करने होकर जगत् को नुकल  
करना

### अभ्यास

पाश्चता का अर्थ क्या है? कौन से दोषों का उदाहरण है?

उद्गायक का अर्थ क्या है? कौन से दोषों का उदाहरण है?

ककराता का अर्थ क्या है? कौन से दोषों का उदाहरण है?

मांगोपांग का अर्थ क्या है? कौन से दोषों का उदाहरण है?

मधुर स्तुरण का अर्थ क्या है? कौन से दोषों का उदाहरण है?

मुक का अर्थ क्या है?

६—भावार्थ लिखो और प्रयोग करो—

शान्ताचक्रमण, अंधपरवरा, विचार-परवरा, शक्ति, शूर्य,  
भूति माधुर्य ।

७—सविग्रह समाप्त लिखो, और वषाधरकना सवि-विग्रह करो—

सातोंग, भाषा-मैत्र-मंदार-मण्ड, - साधनातिष्ठित,  
कवि-मिरदुरण, उमावडर, दिनोदिन ।

८—विरोधार्थ प्रकट कर वषाधरकना शब्द लिखो—

सुधीता, भद्रमणि, मेरुश्री, मीनाश्री, दिनोदिन ।

९—इस गद्य से साहित्य रचना से गद्य रचनेवाले उपयोगी निदान  
या नियम निकालो ।

१०—वर्तमान लेखकों और कवियों के किन्हीं दोषों की ओर ध्यान दिया  
गया है ?

संकेत—

१—भारत-संघ का नूतन परिचय देना ।

२—गद्य विचार पर प्रकाश डालना ।

३—साहित्योन्नति पर प्रकाश डालना ।

## (२८) सूर-सुधा

( १ )

रान कमल यंदौ ह बराई ।

जाहो कृपा पगु गिरि लंपे, खंखे को मय बहु दरमाई ॥

गहिरां सुनै, मृक सुनि धालै, रक बलै निर द्रव धराई ।

सूरदास' श्यामा बरनामय बार बार बड़ा ताहि पाई ॥

( २ )

मोक्षम बांन कुंदल-नल-कामा ।

जिन तनु दिये ताहि बिसराय, ऐसो नानहरामो ॥

भरि भरि उदर विषय का धाय, जैसें सूकर ग्रामा ।

हरि-जन दास हरानयमुत्पन्न का निमिर्नदन करत गुलामो ॥

पापों कान बड़ा हैं मंति, सब पातजन मैं नामो ।

'सूर' पतिव्रत का ठार कह, है सुनिए भ.पति श्यामा ॥

( ३ )

सुम मेर' गार' लाज हर' ।

सुम जलन सब बतवजम करना कछु न करो ॥

य मृग मय धमरत नाह पल 'जन घर' धरा ।

सूरदास' श्यामा बरनामय बार बार बड़ा ताहि पाई ॥

—सूरदास' श्यामा बरनामय बार बार बड़ा ताहि पाई ॥



मय प्रपच की पोट बांधि कर अपने गीत धरी ॥  
 दाग, सुन, घन, मोह लिए ही सुधि बुधि, मय दिमरी ।  
 'मूर' पतिन को बेगि उधारी अब मरी नाव मरी ॥

( ४ )

तजौ मन हरि-विमुखन को संग ।  
 जितके संग कुबुधि उपजात है परत भजन में भंग ॥  
 फडा होत पय पान खराब बिष नहि तजत भुजंग ।  
 कागहि कहा कपूर चुगाए स्वान नहाए रंग ॥  
 रर को कहा अरगजा लेपन मरकट भुपन अंग ।  
 गज को कहा नहाए सरिता बहुरि धरे ग्राहि अंग ॥  
 पावन पतिन पान नहि बेधत गीती करत निर्यंग ।  
 'मूरदास' मदन, कागे कामरि चढ़ै न दूजो रंग ॥

( ५ )

आजु हीं एक एक करि टगिही ।  
 कै हमरी, कै तुमरी माधर अपुन भंगमें लरिहौ ॥  
 हीं तो पतिन सात पीड़न को पाननै हे निर्मलहौ ।  
 अब हीं जयार नचन आहत ही मुक्त विरद बिनु करिहौ ॥  
 कल अन्यायन परगानन नभावन न पायो-हीं गीत ।  
 म 'द'न न न न न न न न न न न न न न न न न ॥

। ६ ।

मूर मूर मूर मूर मूर मूर मूर मूर मूर मूर

हम अन्याय बेटे हम-निरा पागल मयि वान ॥

रहे हर भाज्यो चाहत ही ऊपर दुख्यो सचान ।  
 दुई भौति दुख भयो ज्ञान यह कोन उधारै प्रान ॥  
 हर्षित हो अहि दृष्ट्यो पाग्यो नर हृष्ट संधान ।  
 'मोक्षान' नर लख्यो सचानाहि जय जय कृपानिधान ॥

( 5 )

अप हौं नान्दौ बहुत गोपाल ।

राम-कोश को पहिले सोचना पडे तबुन को माल ॥  
 नहा मोह व नूपुर दाजना निहा मन्त्र रमाल ॥  
 भयम भरो मन भयो पद्मवतः चलन सुमर्गत पाल ॥  
 दुखन नाह बरति पद-भीतर नन विरिह दे माल ॥  
 माया का बरि पटा दीया लाम तलव पयो भाल ॥  
 बाटव पल बालि दिवनाः लज्ज-मुक्ति गरी पाल ॥  
 भयनाम को गरी बरि पाल नन बरि नद-पाल ॥

( 2 )

संज्ञा: कृष्ण काली संज्ञा: २

१. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 २. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ३. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ४. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ५. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ६. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ७. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ८. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 ९. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥  
 १०. अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥ अथ अत्रिः ॥

( ९ )

कहावन ऐमे त्यागो-दानि ।

चारि पदारथ दये सुदामहिं अरु गुरु को सुन आनि ॥

रावन के दम मस्तक छेदे सर-हति मारंगपाति ।

बाभोयगु का लंका दोनो पुरष का पड़िआनि ॥

मित्र सुदामा कियो अत्रायक प्रीति पुरातन जानि ।

'सूदाम' सो कह निदुगई नैननि हूँ को हानि ॥

( १० )

किनक दिन हरि-मुधिरन-वनु त्याग ।

परनिहा-रम मे रमना मे अपने परन दयाए ॥

मेल लगाय कियो सब मदन बसाई सब ममि पाए ।

तिलक लगाय बने रजामा बनि विपरीन के मुग आए ॥

काल बली ने सब जग बंधन प्रयादिक हूँ रोग ।

'मूर' अधम की कहा कान गलि उदर भरे परि गेए ॥

( ११ )

कोउ प्रभु अपने बिरद की आज्ञा ।

महापतिन कबहुँ नहि आयो नैकु दुम्हारे काज ॥

माया सबम-याम-धन-बनिता बन्धन का दुनि पात्र

देखत सुनत सबे जानत हा नर न भाय बाज ॥

अद्वयत बनिन बहुत नुम नर मरननि मून अशत्र

इह न जानि मार अगद-रजत बदन प्रदात्र ॥

लौंजै पार छतारि 'सूर' को महाराज ब्रजराज ।  
नैन करत कहसं प्रभु तुम सौं सदा गरीब-निवाज ॥

( १२ )

जैसेहि राखी तैसेहि रहौं ।  
जानत ही दुख-सुख सब जन को मुख करि कहा कहौं ॥  
कबहुँक भाजन देत कृपा करि कबहुँक भूख सहौं ।  
कबहुँक बड़ो सुरंग, महागज कबहुँक पार बहौं ॥  
कमल-नयन मनस्वान मनोहर अनुचर भयी रहौं ।  
'सूरदास' प्रभु भगत कृपानिधि तुम्हरे चरन गहौं ॥

( १३ )

जो हम भले-धुरं तो तरे ।  
तुम्हें हमारी लाज बढ़ाई दिनती सुनि प्रभु मेरे ॥  
सब तजि तुव-भरनागत बादी निजकर चरन गहं रे ।  
तुव प्रताप-बल बढ़त न काहु निजर भये दर चरे ॥  
घोर देख सब रंक भित्तारी त्यागें बहुत मनरे ।  
'सूरदास' प्रभु तुम्हरी कृपा सैं पाये मुख तु घनेरे ॥

( १४ )

माग जु पार के मोहिं छतारी ।  
पतितन मैं दिनभान पतित हौं पावन नाम तुम्हारी ॥  
बड़े पतिन-पाहिन पासेगहु पजनिज को हौं दुदिपागी ।  
भासै नरक नाडे मेरो सुनि जगहु देत हठि टारी ॥

छुट पतित तुम तारे ओपति भव न करी जिय गारी ।  
 'सूरदास' सौचौ तब मानै जब होय मम निम्नारी ॥

( १५ )

प्रभु तुम दोन के दुख-हरन ।  
 त्याग-सुंदर मदन-मोहन बानि भयरन-भरन ॥  
 दूरि देखि मुदाम भावत पाव दूत पर्यी परन ।  
 लख सौ बहु लखि होनी बानि भवर-हरन ॥  
 बधे कौरव, मंजि सुरपति, बने गिरिवर-धरन ।  
 'सूर' प्रभु की कृपा जापर भक्त-जन सब तरन ॥

( १६ )

प्रभु मेरे घौसुन चित न परी ।  
 ममदरमी प्रभु नाम विहारौ सगने पनाहि करी ॥  
 एक सोदा पूजा में राखन एक घर बधिक परी ।  
 यह घर पर पारम नहि जानन कंधन करन परी ॥  
 एक नदिया एक नार कहावन मैना नोर परी ।  
 जब मिलिके दाउ एक बदन भव मुरमरि नाम परी ॥  
 एक जाव एक गव कहावन मरमराम भगरी ।  
 भव का घर मरमर 'सूर' बनाव नहि बन जाव परी ॥

**पाठ-सहायक**

१. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 २. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ३. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ४. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ५. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ६. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ७. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ८. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 ९. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—  
 १०. बूँद—बूँद, बूँद हैं, बोट—बोट, बोट—

**FOOTNOTES**

**‘‘क्या है वह सब, कौन कह रहा है !’’**

2. 1997 年 12 月 20 日 20 日 20 日 20 日

[illegible]

1970-1971  
 1972-1973

*[Faint handwritten notes at the bottom of the page]*

[illegible][illegible][illegible]

१०—इन पदों में मूर की भक्ति का कैसा प्रतिबिम्ब तुम्हें दिखलाई पड़ता है ?

११—राम-भक्ति-संबंधी गुलसीशत के कुछ पद जो तुम्हें बाद में सुनाकर समझाओ ।

संकेत—

१—मूर के कवय की आलोचनात्मक विवेचना कर समझाना ।

२—मूर और गुलसी की तुलना करना-बताना ।

३—मूर और गुलसी की भक्ति-धारा का भेद दिखाना ।









इसकी नीति से जन-संघन उद्विग्नता पड़ा। वे हिंदी भाषा के बारे में  
के. ए. गंगा विश्वविद्यालय कायदा। हिंदी भाषा के प्रचार में, इसका  
इच्छासे जनता को प्रेरित किया। गंगा विश्वविद्यालय का प्रचार, १९  
विचारों को प्रेरित कर हिंदी के प्रचार-प्रसार में उद्विग्नता पड़ा। गंगा  
भाषा के प्रचार में जो प्रेरित करता है।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(အကျဉ်းချုပ်)

[illegible]

मिथवन ५. श्यामविहारी मिथ, वसन्त ५०, रायचरादुर —

(नवमाने द्विती-गार्हपत्य के गृह्य-योग)

ये नीचे आते हैं — १. गणेश उद्घाटी, २. दशमविहारी  
श्री १०. गुरुदशविहारी । नीचे आते हैं गणेश श्री १०. महा  
१५५ है । ये कान्धदुःख दुःखभूतान् शरीरा के दुःखे (मिथ मिथ  
विहारी के वाच्य इनके इनके गणेशमिथ मिथ माने गए) शरीर  
(अथवा इ) के निशानों हैं । वे मदनमाने इवमाने हैं । वही  
इव कान्ध १०. दशमविहारी आ का हो हाथ बनने हैं —

१०. दशमविहारी 'मिथ का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०.  
मै दुःख । १० का का दशमविहारी गणेश गणेश १०. १०. १०. १०.  
इव, १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
का इ वही गणेश का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
कान्धदुःख श्री १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
१०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
कान्धदुःख का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
गुणमिथ १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
का वही गणेश श्री १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.

१०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
मै गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
१०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
१०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
१०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.  
का गणेश गणेश १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०. १०.

आपने कई मुख्य ग्रंथ लिखे जिनमें से मेघदूत, हिन्दू-मार्ग, हिन्दू-मार्ग, भारतवर्ष का इतिहास, नवोन्मूलन (नाटक), पूर्ण भारत (नाटक), भू-दीवारी (काव्य), नागान और रुच का इतिहास आदि लिखे हैं।

इनकी भाषा सरल, सुबोध, स्पष्ट, और प्रौढ़ होती है।  
शैली रोचक, भावपूर्ण और गदाबलीपूर्ण है।

पंडित रामचंद्र शुक्ल -- जन्म-संवत् १९४१

(मिडना)

आपका जन्म आरिचन की पुलिसा की बली जिला के अगोना गाँव में हुआ। इन्होंने एक-एक कर-कालिज में शिक्षा पाई। शाल्यकाल में मरकत की भी शिक्षा पाई थी। सन् १९०६ में इन्होंने कानून की भी परीक्षा दी थी, पर विफल रहे। इस बीच वे मिडनापुर मिशन स्कूल में मास्टर हो गए थे। १९०८ में वे नागरी-प्रचारिणी मंडल में एडोशब्दशास्त्र के सहायक सहायक के रूप में चुनाए गए। आठ नौ वर्ष तक इन्होंने नागरी-प्रचारिणी संस्थान का सहायन किया। आजकल आप काशी-विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक हैं। आप काव्य और गद्य-लेखक दोनों हैं। आपका कवितारं अत्यंत भावपूर्ण होता है। कुछकर कविताओं के अतिरिक्त आपने कुछचरित नामक एक महाकाव्य लिखा है। आपके निबंधों में बड़ा गूढ़ भाव भरे रहते हैं, इससे वे नाट्य और दुरुह होते हैं। इन्होंने अपने निबंधों के लिये या तो सांसारिक विषय चुने हैं, या मनोविकार, दुःख और आयसी का सामक और परलोक आल बनाए हैं इन्होंने लिखा है। इनकी समालोचनाओं में हिंदी के आलाचना करने में एक नए युग का सुरुआत है।

— १११ —

10

[illegible]

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

4244-4245

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

not known

[illegible]

पं० चंद्रमौलि शुक्ल, एम० ए०, न० टी०—

(जापान की शशा-प्रणाली)

आप कान्पकुब्जवंशीय शुद्ध हैं। इस समय आप ट्रेनिंग कालेज बनारस में राहत प्राप्त कर रहे हैं। आप अंगरेज़ी, संस्कृत और हिंदी के विद्वान् हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। हिंदी की सेवा आप बहुत दिनों से कर रहे हैं। आपकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और भावपूर्ण होती है।

रा० व० लज्जाशंकर झा, एम० ए०, एल० टी०—

(जीवन-संग्राम और छोटे प्राणी)

आप अंगरेज़ी और हिंदी के पंडित हैं। इस समय आप काशी-अरबिण्डालय के ट्रेनिंग कालेज में प्रसिद्ध हैं। आपने कई सुंदर पुस्तकें लिखी हैं उनमें से "सिद्ध-प्रवृत्ति" अत्यंत लोकनीय है। आप भी हिंदी-प्रेमी और साहित्यप्रेमी हैं। आपकी भाषा प्रौढ़ और शुद्ध होती है; और ऐसी सुवाचस्प्य तथा स्पष्ट रहती है।

पं० कानताप्रसाद शुक्ल—जन्म-सं० १९३२

(सभाषण में शिष्टाचार)

आप जबलपुर-निवासी कान्पकुब्ज शास्त्री हैं। आप लखी शैली के कवि और लेखक हैं। आपने 'हिंदी का एक बड़ा व्याकरण' बड़ी योग्यता से लिखा है। आपकी 'चवन्नी' गद्यवती आदि मानिक परिष्कारों में प्रकाशन हुक्म रहने है। आपकी भाषा परिमार्जित, शान्तिपूर्ण और भावपूर्ण होती है। आपकी शुद्ध, सुदृढ़-वैयक्तिक और भावपूर्ण शैली है। आपकी भाषा स्पष्ट और लोकनीय है।

החוק –

(॥ ॥ ॥ ॥)

[illegible]

7-14-51 5:45 PM

॥ अथ वरुणः ॥

[illegible]

देकर इनकी माता मर गई थी । एक शरी ने तीन बरों तक इनका पालन किया । तीस सालने में वह भी मर गई । कुलचरम रामक बार इनके पिता ने इन्हें त्याग दिया । वह नरहरिदास जी ने इनकी पाला-पोसा की । इनके सब संस्कार किए । इन्हीं ने इनका नाम तुलसीदास रखा । इनका रहस्य नाम रामकीर्ण था । गैरसमातन जी ने पास काशी में इन्होंने किया प्राप्त की । आगे चलकर इनका विचार भी हुआ । एक रा. ने अत्यंत प्रेम से बारणसी की ओर गीते गीते अपनी स्तुति को शीरे गए । इस पर इनकी स्त्री ने इन्हें पचसाव जिससे इन्हें वैराग्य हो गया । इन्होंने मारे भारत का भ्रमण किया और गीताबली पर रामचरितमानस मसीसे कई अनुगमन प्रय लिले । इनकी मृत्यु काशी में स० १६८० में हुई ।

कैशवदास. जन्म-सं० १९१२, मृत-सं० १९७४

(व जल और अम्ल)

ये सनातनकुल ५. ५० काशीन ५ सुप्रसन्न एवं शौर्य नरेय भी रामचंद्र के भाई भी इन्द्रजीतसिंह के मित्र मित्र थे। महाराज गोरखलाल ने इनको एक सार पर प्रसन्न होकर इन्हें ६ लाख बख्श पुरस्कार में दिए। इन्हीं के कहने में उन्होंने शौर्य नरेय का अनुमान भी सुझाव करा दिया।

[illegible]